Chapter-1

-=: प्रथम अध्याय : कमलेश्वर व्यक्तित्व एवं कृतित्व :=-

हम आगे यह लिख चुके हैं कि कमलेश्वर जी ने न तो आत्मकथा लिखी है, न ... डायरी लिखने की आदत डाली है । अतएव कमलेश्वर जी के जीवन के सम्बन्ध की सामग्री उपर्युक्त तथा अन्य प्रकार के साधन द्वारा ही उपलब्ध की गई है । यह सही है कि भेंट होने पर साहित्यकार के जीवन के सम्बन्ध में कुछ जाना जा सकता है, किन्तु कुछ साहित्यकार आत्मप्रशंसात्मक टिप्पणियाँ अधिक कर सकते हैं जिनमें सत्यांश लुप्त हो जाता है तो कुछ अपने जीवन की गोपनीय बातें प्रकाश में लाना पसन्द नहीं करते ।

मैंने कमलेश्वर जी से साक्षात्कार करने पर जो कुछ ज्ञात हो सका है और उनके परिजन एवं आत्मीयजनों से हुई प्रत्यक्ष बातचीत तथा पत्र - व्यवहार के आधार पर जो कुछ प्राप्त हो सका है तथा अन्यत्र लिखी या किंचित सामग्री के माध्यम से उनके जीवन के विषय में लिखने का प्रयास किया है । जीवन परिचय में कमलेश्वर जी के जन्मकाल एवं वंशज, बाल्यकाल, शिक्षा - दीक्षा, पारिवारिक जीवन, व्यवसायिक जीवन, आदि पक्षों पर विचार करना उचित है । सर्वप्रथम हम कमलेश्वर जी के जन्म एवं वंश आदि के विषय में लिखना समीचीन मानते हैं । जिसके परिप्रेक्ष्य में उनके जीवन के विविध पक्ष स्वतः उद्घाटित होते जायेंगे ।

§1§ जन्म एवं वंशज :

सक्सेना कायस्थ कुल में उत्पन्न श्री कमलेश्वर का नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना था । कालांतर में "प्रसाद" अंश को उन्होंने अपने नाम से पृथक् कर दिया और साहित्य जगत में वे कमलेश्वर के नाम से विश्रुत हुए । वैसे बाल्यकाल में "कैलाश" नाम से जाने जाते थे । उनका जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले एवं कस्बे के कटरा 229 में हुआ था । यह कस्बा आगरा और इटावा नगरों के पास है । इस मैनपुरी को न शहर की संज्ञा दी जा सकती है न गाँव की इसे इन दोनों के बीच कस्बा के नाम से जाना जाता है । कस्बे में गाँव और शहर दोनों की मिली-जुली विशेषताएं अल्पाधिक मात्रा में मिल जाती हैं । यहाँ पहुँचकर गाँव के आदमी को शहर का आनंद मिल जाता है । और किसी शहराती को मैनपूरी कस्बे में थोड़े बहुत गाँव के नजारे दिख जाते हैं । शहर और गाँव का यह मिलन बिन्दु है । जहाँ प्राचीन और नवीन दोनों मिलकर समझौते के साथ रहते हैं ।

उनका जन्म प्रातः 10 बजे बुधवार को हुआ था । हिन्दी कलेन्डर के हिसाब से 11 दिसम्बर मानते हैं और वैसे 6 जनवरी 1932 है ।

वे लोग अधिक भाग्यशाली होते हैं, जो अपने पितृपक्ष तथा मातृपक्ष दोनों ओर के पारिवारिक सुखों का आनन्द प्राप्त करते हैं, किन्तु कमलेश्वर जी ऐसे भाग्यशालियों में से नहीं थे । बालक कमलेश्वर जिन पर उनके पैतृक गुणों तथा संस्कारों का प्रभूत प्रभाव पड़ना चाहिये था, उनसे वे वंचित रह गये । पितामह की दुलार भरी गोद और आशीर्वाद उन्हें नहीं मिला । कमलेश्वर जी ने अपने पितामह को कभी नहीं देखा । बस मात्र अपनी माता रामकुँवर जो कालान्तर में शान्ती देवी के नाम से जानी जाती रहीं, से सुना है कि जब वे तीन - चार साल के थे तब अपने पिता जी जगदम्बा प्रसाद की ऊँगली पकड़कर किरायेदार के पास मकान खाली करवाने गए थे - वापस आने पर दौरा पड़ जाने के कारण पिताजी का देहान्त हो गया था । बालक कैलाश (कमलेश्वर प्रसाद) इस प्रकार पितृ सुख से भी वंचित हो गया । पिता का संरक्षण - मार्गदर्शन - और दुलार सब कुछ खो गया - अब माँ ही इनके पिता और माता दोनों का उत्तरदायित्व संभालती है । इनके बाबा माधव प्रसाद जिनका सम्बन्ध महाराजा चेतसिंह से था - भवन निर्माण विभाग में ओवरसियर थे । साथ ही इन्हें जमींदारी भी प्राप्त थी और अंग्रेजों के खिलाफ जिनमें विद्रोह की आग भी भड़क उठी थी । बाबा की यह स्वातंत्र्य-प्रियता किसी न किसी रूप में बालक कमलेश्वर में भी उतर आई जिसका प्रमाण कमलेश्वर के आगे के जीवन में प्रगतिशीलता तथा पीड़ितजनों के दुःख दर्द को वाणी देने के रूप में हम देखेंगे ।

महाराजा चेतसिंह से भी माधव प्रसाद को जो पद और जमींदारी प्राप्त हुई थी, वही इनकी मृत्यु के उपरान्त इनके पुत्र जगदम्बा प्रसाद को भी मिली । जगदम्बा प्रसाद ने पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात् दूसरा विवाह रामकुँवर के साथ किया था । पहली पत्नी से जो पुत्र हुआ था उसका नाम द्वारका प्रसाद था । उन्हीं द्वारका प्रसाद को अपने पिता श्री जगदम्बा प्रसाद की मृत्यु के उपरान्त जमींदारी मिली - इन की विमाता कमलेश्वर की माँ ने पारिवारिक मर्यादा को दृष्टि में रखकर जमींदारी के विषय में द्वारका प्रसाद से कभी कुछ नहीं कहा और घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई ।

पिता जगदम्बा प्रसाद साधु स्वभाव, तथा सात्त्विक प्रकृति के व्यक्ति थे । वे माँ दुर्गा के बड़े भक्त थे - नित्य मंदिर जाते और पूजा - अर्चना में अपना मन लगाते । वे शांत चित्त थे । उदार थे । जरूरत पड़ने पर आधी रात को भी दौड़

पड़ते थे । उस समय के अन्य जमींदारों की तरह जनता के शोषक वे नहीं थे वरन् वे जनता के पोषक थे । जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि उनकी दो शादियाँ हुई थीं । कमलेश्वर और उनके अग्रज सिद्धार्थ, जगदम्बा प्रसाद की दूसरी पत्नी के पुत्र थे । इनका परिवार गाँव में सबका श्रद्धास्पद था, सबका आदरास्पद था ।

§2§ बाल्यकाल :

जीवन यात्रा का सबसे मधुर, मार्मिक और घटना का पड़ाव बचपन का होता है । भविष्य निर्माण के अनेक बीज यहीं अनजाने में अंकुरित होते हैं जिन पर भविष्य का "बिरवा" पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है । कहावत है कि " सबै दिन रहत न एक समान " - यदि बचपन आनंद वैभव का रहता है तो आगे का जीवन कहीं न कहीं इन वैभवों से रिक्त भी होता है और तब बचपन की याद बड़ी रोमांचक, प्रिय और मधुर लगती है । और एक ललक मन में पैदा होती है कि काश वह बाल्यकाल फिर वापस आ जाता । यदि बचपन दुःखों, अभावों और विवशताओं से पूर्ण रहा होता है तब जब कभी भविष्य में सुख, वैभव और आनंद प्राप्त होता है तो बचपन की याद मन में एक टीस, एक त्रासदी छोड़कर रह जाती है । शायद यहाँ भी बचपन ने मनुष्य को जीवन की प्रयोग शाला में खरा उतरने और पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है ।

कमलेश्वर जी का बाल्यकाल अभावों, दुःखों और संतापों के बीच गुजरा था । पितामह नहीं थे । उनके तो दर्शन भी नहीं हुए थे । पिता भी तीन-चार वर्ष की आयु में ही अपना हाथ झटक कर दूर हो गये थे । - हृदय गति रूक जाने पर दिवंगत हो गये थे । और आपदाओं का पहाड़ परिवार पर अचानक ही टूट पड़ा था । जिसके तले सब कुछ समाप्त हो गया था । पारिवारिक प्रतिष्ठा, सामाजिक पहचान और आर्थिक सम्पन्नता सब कुछ नष्ट हो गई थी । जमींदारी का सुखभोग भोगनेवाला श्री जगदम्बा प्रसाद सक्सेना का परिवार मात्र जमींदार कहलाने भर का रह गया था । कपड़े के थोक की दूकान अग्नि में भस्म हो गई थी और हजारों रूपयों के कर्ज ने सामाजिक प्रतिष्ठा को बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया था। इन विपत्तियों में बालक कमलेश्वर के भविष्य का निर्माण हो रहा था । "दीवाल पर लटके हुए दो चित्र हैं जिनमें एक बाबा का दूसरा बाबूजी का । बड़े भाई सिद्धार्थ बालक कमलेश्वर को बतलाते हैं । सिद्धार्थ जो इस परिवार के सदस्यों का पेट भरने का दायित्व लेकर शहर में

नौकरी करने जाते हैं । अपना पेट काटकर भी अपने घर वालों का पेट भरते हैं । कभी - कभी अपने अखबार और दूध को बंद करके बालक कमलेश्वर की लालसाओं की एक खिड़की खोल देते हैं । माँ अपनी साड़िओं की किनारिओं को सहेज कर रखती है और स्कूल खुलने पर अपने बच्चे का नया बस्ता सिलती हैं । ऐसे विषम समय में सिद्धार्थ भी उनके बीच से उठ जाता है । तब तो लगता है कि इस परिवार का परीक्षा काल आ गया ।

वह लड़ाई का जमाना था सर्वत्र अभाव ही अभाव दृष्टिगोचर होते थे । सामंती रोब - दाब समाप्त हो चुकी थी । पैसों की तंगी के कारण नौकर - चाकर बिदा हो चुके थे, गाय - भैंसे ज़िन्दा रह सकें, इसलिए उन्हें गाँव भेज दिया गया था । कमलेश्वर कहते हैं " पर हम ज़िन्दा रह सकें - इसका कोई तरीक़ा नजर नहीं आ रहा था । माँ रात ढाई-तीन बजे उठकर हाथों में कपड़ा लपेट-लपेट कर चक्की से आटा पीसती, बर्तन धोती और सुबह होते - होते नहा - धोकर "पुराने ज़मींदार घराने की मालकिन" हो जाती । ग़रीब और टूटे हुए मुहल्लेवालों के घावों पर मरहम लगाती और रात को सूने कमरे में बैठ कर चुपचाप रोया करती । सिद्धार्थ के कपड़े बक्से में से निकाल - निकाल कर देखती और बुरी तरह रोती .... घर की ऊँचाई और ठोस दीवारें एक भी सिसकी बाहर न जाने देतीं और दोपहर में माँ सिद्धार्थ के उन्हीं कपड़ों को काट - काट कर मेरे नाप का बनाया करती । ... मंडियों में बेशुमार अन्न, घी, गुड़ और कपास थी पर माँ की धोती की खूँट में एक - दो नोट और कुछ सिक्के थे .... दूकानदार बड़ा तराजू पीछे सरका कर, सबसे छोटे वाले तराजू से उनके लिए चीजें तौलता था । दुनिया का यह व्यवहार अपमानित करता था । " इतने घोर अपमानों और अभावों के बीच कमलेश्वर के व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा था । उनके अंदर विद्रोह का स्वर कुलमुला रहा था किन्तु कमलेश्वर जी कहते हैं - " लेकिन मेरी माँ के वैष्णव संस्कार विद्रोही होने से रोकते रहे । और दबाया हुआ विद्रोह मेरी घोर अप्राकृतिक चेष्टाओं में फूटने लगा । वह एक दुःखद दौर था । "

बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा पर जितना प्रभाव अध्यापक का पड़ता है, उतना अन्य किसी का नहीं, चरित्र निर्माण से लेकर भविष्य निर्माण तक एक अच्छे सहृदय और चरित्रवान अध्यापक की शिक्षा पर प्रायः निर्भर करता है ।

बच्चे अध्यापक से बहुत कुछ सीखते हैं, बहुत कुछ का अनुकरण करते हैं और अध्यापक के स्नेहपूर्ण व्यवहार से अनुप्रेणित होकर वह अपने पढ़ने लिखने में भी खूब दत्त चित्त होते हैं । प्यार और दुलार से बच्चे आगे बढ़ते हैं और ठीक इसके विपरीत मार - पीट और अनावश्यक फटकार से भयभीत होकर वे अपने पढ़ने - लिखने से मन चुराने लगते हैं । बहुत से बच्चे अध्यापक की मार के डर से स्कूल न जाकर इधर - उधर भटकने लगते हैं । एक दौर था जब अध्यापकों की डंडे की मार से छोटे - छोटे बच्चों के कोमल शरीर असहय पीड़ा भोगते थे । बालक कमलेश्वर ऐसे ही कुछ अध्यापकों की चपेट में आ गये थे जिनमें से एक की मार को सह लेने के लिए अपनी कमीज के नीचे छोटी कुर्सी की गद्दी बाँध कर उन्हें जाना पड़ता था । कमलेश्वर लिखते हैं कि - " पढ़ने की ओर से रुचि मेरे उन मास्टर साहब ने हटा दी थी, जो मैनपुरी की तम्बाकू खाकर गुस्सा होते थे, तो उनके मुँह से फव्वारा - सा छूटता रहता था, और पीटते - पीटते वे लस्त कर देते थे । मैं हमेशा कमीज के नीचे छोटी कुर्सी की गद्दी बाँध कर जाया करता था और काछी मास्टर को मार डालने की साजिशें किया करता था । " वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है एक अच्छे वातावरण की । जिसमें समवयस्क बच्चें हों, जो खेलते - कूदते हों स्नेह और सौहार्द से रहते हों जिनके माता - पिता सुशिक्षित हों और कुसंस्कारी लोगों का जहाँ जमघट न हो क्योंकि अच्छाईयों की अपेक्षा बुराईयाँ अपना दीर्घगामी और व्यापक प्रभाव डालती हैं । और अल्पवयस्क बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर यदि इन बुराईयों का एक भी कीटाणु आ बैठा तो वह आगामी जीवन में अपना दुष्प्रभाव अवश्य दिखलायेगा । किन्तु अपवाद तो सर्वत्र होते हैं और जो अपवाद होते हैं वह विशिष्ट बन जाते हैं । कमलेश्वर भी एक अपवाद थे अतः वह विशिष्ट भी बन सके । कमलेश्वर का कथन है - "कस्बे के स्कूल में बदचलन मौलवी और मुहल्ले के चबूतरों पर बैठे रुग्ण और कुण्ठित पहलवान थे - मोटर - अड्डों पर बदमाश ड्राइवर और क्लीनर थे - और था अँधेरा, जो सरेशाम होने लगता था । पूरा कस्बा अँधेरे की चादर में लिपट जाता था और लड़ाई के ज़माने में पढ़ने के लिए भी हमें मिट्टी का तेल मयस्सर नहीं होता था । तब हम कुछेक दोस्त शीशियाँ और कीप लेकर रात को म्युनिसपालिटी की लालटेनों से तेल चुराने के लिए निकलते थे । " कमलेश्वर के उपर्युक्त कृत्य पर यदि गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में टिप्पणी की जाय तो यही कहा जा सकता है कि - "काह न आरत करै कुकरम्" समाज में अकेले का कोई नहीं होता और अकेला जब आर्थिक विपन्नता का

शिकार तब तो वह बिल्कुल अकेला हो जाता है । तब सभी अपना रोब जमाते हैं और उसके साथ दुर्व्यवहार करना अपना अधिकार समझते हैं । कमलेश्वर के बचपन की एक मार्मिक घटना का दर्द उन्हीं के शब्दों में सुनना बेहतर होगा - "चोटें लगती थीं, तो मैं दर्द से कराहता और रास्ते में बैठ - बैठ कर अकेला अस्पताल पहुँचा करता था, और मुझे अकेला देखकर वह ज़ालिम कम्पाउण्डर बड़ी बेरहमी से घाव को दबा दिया करता था । मैं दर्द से बिलबिला कर सहारे के लिए कभी उसकी बाँह पकड़ लेता था, तो वह मेरा हाथ बुरी तरह झटक कर डाँटता था और मैं अपने आँसू दबाये मरहम - पट्टी करवा लेता था । वहाँ से निकल कर मैं इमली के पेड़ के नीचे बैठकर रो - रो कर अपना दिल हलका कर लिया करता था । ऐसी विषम परिस्थितियों में कमलेश्वर जी का बचपन बीता ।

§3§ <u>शिक्षा-दीक्षा :</u>

कमलेश्वर जी की प्रारम्भिक शिक्षा मैनपुरी से प्रारम्भ हुई । प्रारम्भिक कक्षाओं के अध्यापक उनके लिए प्रेरक नहीं सिद्ध हुए । काछी मास्टर जैसे निर्दयी अध्यापक जो मुह में सदैव पान, तम्बाकू भरकर थूक उड़ाया करते थे । कमलेश्वर के मन में स्कूल जाने के लिए अरुचि उत्पन्न करते, चरित्रहीन मौलवी ने मन पर और भी खराब छाप डाली । अभावों से ग्रस्त बालक कमलेश्वर अपने अध्यापकों के भेदभावपूर्ण व्यवहार के भी शिकार हुए । कमलेश्वर लिखते हैं "कस्बे में जो अफ़सर आते थे, वे बड़ी ठसक से रहते थे.... उनके लड़के गुलदस्तों की तरह सजे हुए दर्जे में आते थे और सरकारी स्कूल के हमारे मास्टर उन्हें हमेशा मानीटर बनाया करते थे । यह तब होता था जब कि मैं अपनी सारी उदासीनता के बावजूद दर्जे में ज़्यादातर अव्वल आया करता था । यह स्थितियाँ मुझसे बर्दाश्त नहीं होती थीं ।" जैसे कि अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है कि कमलेश्वर एक सम्पन्न जमींदार परिवार में जन्मे थे । जहाँ पढ़ाई - लिखाई में विशेष ध्यान दिया जाता था । उत्तर भारत में कायस्थ एक ऐसी जाति है जहाँ साक्षरता लग-भग शत प्रतिशत है । खाने को भले न हो लेकिन पढ़ाई का बंदोबस्त करना प्रत्येक कायस्थ परिवार में अनिवार्य सा रहता है । कमलेश्वर के परिवार की सम्पन्नता परिस्थितियों वश समाप्त हो चुकी थीं और चारों ओर अभाव ही अभाव था । नई किताबें खरीद पाना भी बालक कमलेश्वर के लिए कठिन था । पुरानी किताबें लेते तो उनमें पृष्ठ नहीं होते । कमलेश्वर ने लिखा है -

" मुझे आज तक अफ़सोस है कि मैं अपने पढ़ने के लिए कभी नयी किताबें नहीं खरीद पाया।

जब मेरे साथ के लड़के अपने पिता या बड़े भाई के साथ किताबों की दूकानों पर जाकर कोर्स की नयी - नयी किताबें और कापियाँ खरीदते थे, तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते थे।" .... "गर्मी की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुलता था, तो वहाँ जाने का कोई उत्साह मन में नहीं होता था । पुरानी किताबें .. वह भी पूरी नहीं -- कापियाँ खरीदने को पैसे नहीं होते थे, इसलिए भाई साहब के आने का इंतजार रहता था, कि वे आयेंगे तो सरकारी कागज के दस्ते - दो दस्ते लायेंगे और तब मेरी बेनाप की कापियाँ बनेंगी ।" ..... "एक आने की रबर या पटरी के लिए माँ से पैसे माँगते हुए मुझे दहशत होती थी, क्योंकि माँ बेबसी में झुँझलाया करती थीं । तीन - तीन दिन मैं भूगोल की कक्षा में नहीं जा पाता था, क्योंकि बाबूराम जैन की दूकान से दुनिया का नक्शा खरीदने के लिए माँ से कुछ भी कहने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती थी।" बच्चों के मन में अध्यापकों का भेद-भाव पूर्ण व्यवहार एक हीन ग्रंथि उत्पन्न करता है । और भीतर ही भीतर हीन ग्रंथि तोड़ती रहती है । कमलेश्वर के स्कूल में अफसरों के बच्चे अच्छे कपड़े पहने हुए फूलों की तरह सजे हुए आते थे, उन्हें मास्टर हमेशा आगे रखते और मानीटर बनाते थे । कमलेश्वर को इस व्यवहार से ठेस लगती, और वे उदासीन भी होते फिर भी कक्षा में प्रायः प्रथम आते । स्कूल में इन्हें प्राप्त होने वाले इनाम दूसरों को दे दिये जाते थे और फीस समय पर न चुकाने की वजह से इनका अपमान भी होता था । कमलेश्वर ने लिखा है - "जब तक सिद्धार्थ थे, मेरी फीस आधी माफ हो जाती थी । पर उनके चले जाने के बाद फिर कभी मेरी अर्जी मंजूर नहीं हुई । .... आखिर मैंने सालाना में अव्वल आकर वज़ीफा लेने की ठान ली थी - क्योंकि छमाही में मैं अव्वल आ जाता था, पर सालाना में तहसीलदार, कोतवाल साहब या इंस्पेक्टर का लड़का ही अव्वल आया करता था । अव्वल आना मेरे लिए पढ़ाई की दृष्टि से उतने सन्तोष की बात नहीं थी, जितनी कि आर्थिक विवशता के दृष्टिकोण से थी । आखिर मैं अव्वल आया पर वज़ीफे के लिए सिद्धार्थ मुझे मरते - मरते तक खत लिखकर पूछते रहे कि "मिले या नहीं" - पर उनके मरने तक मुझे मेरा वज़ीफा नहीं मिल पाया था और जब मिला था तो "वारफंड" में आधे रुपये काट लिये गये थे ।" किसी प्रकार अभावों और विषमताओं से लड़ते हुए कमलेश्वर ने लग-भग 14 वर्ष की आयु में गवर्मेन्ट स्कूल मैनपुरी से 1946 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की । हाईस्कूल के उपरान्त इनके आगे पढ़ने का प्रश्न उत्पन्न हो उठा । इन पर सबसे बड़े सौतेले भाई ने यह नारा उछाला कि "ज्यादा पढ़ाने

से लड़के हाथ से निकल जाते हैं।" उनके सौतेले भाई को यह हरगीज पसंद नहीं था कि उन्हें दसवें के बाद आगे पढ़ाया जाय । उनके भाई उन दिनों कानपूर छावनी के "योरोपियन" इन्स्टीट्यूट" में मैनेजर थे । जहाँ अंग्रेज और अमरीकन सिपाही मौज मस्ती करते थे । यह दूसरे विश्व युद्ध का समय था कमलेश्वर उस समय अपने भाई के पास कानपूर में रह रहे थे । "योरोपियन इन्स्टीट्यूट" के भोग विलास और कुत्सित दृश्यों ने किशोर कमलेश्वर के मन पर बड़ा क्रान्तिकारी प्रभाव डाला । इन्हें लगा यह स्थान उनके लिए नहीं है । उनका मन यहाँ के हर रास्ते पर लगे "नो एन्ट्री" बोर्डों को देखकर आहत हो गया । और वे कानपूर महानगर को छोड़कर अपने कस्बे मैनपूरी की ओर चल पड़े । वहीं उनका सम्पर्क क्रान्तिकारी समाज पार्टी से हो गया । अब कमलेश्वर इलाहाबाद आ जाते हैं अपनी आगे की पढ़ाई करने । यहीं वे क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी का काम करते हैं और कायस्थ पाठशाला इन्टरमीडिएट कॉलिज में इन्टरमीडिएट की पढ़ाई भी करते हैं । पढ़ाई और क्रान्ति दोनों साथ - साथ चल रहे हैं ।

सन् 1950 में उन्होंने के. पी. इंन्टर कॉलिज इलाहाबाद से इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली । क्रान्तिकारियों के साथ कार्य करने के अपराध में इन्हें दंड भोगना पड़ा । झूठे आरोप लगा कर इन्हें कॉलिज में दो - साल बैठने से रोक दिया गया । यह बी. एस. सी. परीक्षा थी, इसके उपरान्त इन्होंने बी. ए. में दाखला लिया । बी. ए. में इनके विषय थे जोग्रोफी, इकोनोमिक्स और इंगलिश । बी. ए. में इनके साथिओं में सुप्रसिद्ध कवि दुष्यन्त कुमार थे । दुष्यन्त कुमार ने लिखा है कि - "वह एक छकड़ा साइकिल पर यूनिवर्सिटी आया करता था । और तलब लगने पर किसी झाड़ी के पीछे या एकान्त कोने में छुपकर बीड़ी - सिगरेट पिया करता था । शायद हर महीने उसका नाम फ़ीस जमा न करने वाले "डिफ़ॉल्टर" छात्रों की लिस्ट पर रहा करता था, क्योंकि जेब - खर्च नाम की कोई चीज उसके पास न होती थी, इसलिए फ़ीस के रूपयों में से कुछ न कुछ वह हमेशा खर्च कर लेता था और वक़्त पर उसके पास पूरे पैसे नहीं होते थे।" यूनिवर्सिटी की पढ़ाई जारी रह सके और फीस का बंदोबस्त हो जाय इसके लिए कमलेश्वर को एक सामान्य सी पत्रिका के कार्यालय में काम करना पड़ता था, जहाँ से पचास रूपये महीना मिलता था । इस समय तक कमलेश्वर का लेखन प्रारम्भ हो चुका था । इनकी पहली कहानी "कामरेड" सन् 1948 में प्रकाशित

हो चुकी थी । उन्होंने अपने को औरों से बिल्कुल अलग कर लिया था जिससे कुछ ऐसा काम कर सकें जिससे पैसे भी मिल सकें और कुछ साहित्य का लेखन भी होता रहे । इस समय वे साबुन बनाने से लेकर स्याही तक खुद बनाते थे । और संकोची इतने थे कि खाना भी भर पेट नहीं खा पाते थे । सन् 1954 में कमलेश्वर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय लेकर एम. ए. किया । उनके मुख्य पठित विषयों में भौतिकी, रसायण शास्त्र, गणित, भूगोल रहे हैं । लेकिन ड्राँइंग में उनकी रुचि बचपन से ही थी वे ड्राँइंग भी अच्छी कर लेते थे । यदि वे लेखक न होते तो संभवतः वे बहुत अच्छे पेंटर हुए होते ।

§4§ पारिवारिक जीवन :

अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है कि कमलेश्वर जी का परिवार अनेक उतार चढ़ाव देख चुका था । इनके पितामह श्री माधव प्रसाद ख्यात नाम व्यक्ति थे । और उनका सम्बन्ध बनारस के सुप्रसिद्ध महाराजा चेतसिंह के साथ था । माधव प्रसाद को जमींदारी प्राप्त हुई थी । वह भवन निर्माण विभाग में ओवरसियर थे । अतः परिवार में रूपये पैसे की कोई कमी नहीं थी । परिवार सम्पन्न था । कमलेश्वर ने अपने पितामह के दर्शन नहीं किये और न उन्हें पारिवारिक सम्पन्नता का सुख भोग ही मिला । तीन-चार वर्ष की आयु में इनके पिता जगदम्बा प्रसाद का भी देहान्त हो गया । जगदम्बा प्रसाद जी ने दो विवाह किये थे । दूसरा विवाह प्रथम पत्नी की मृत्यु पश्चात् किया था । उनकी प्रथम पत्नी का नाम शायद शकुंतला था । उनकी प्रथम पत्नी से एक बेटा द्वारका प्रसाद का जन्म हुआ और द्वितीय पत्नी जो घर में "रामकुंवर" के नाम से जानी जाती थी उनसे सात पुत्रों का जन्म हुआ जिसमें सबसे बड़े भाई महेश्वरी प्रसाद जो अभी तीन - चार साल पहले ही उनकी मृत्यु हुई और सबसे छोटे कमलेश्वर हैं । द्वारका प्रसाद ने पिता की मृत्यु के उपरान्त घर का सारा कामकाज संभाला और जमींदारी की देखभाल का उत्तरदायित्व भी उन्होंने ले लिया । अतः कमलेश्वर की माँ जो कालांतर में शांतीदेवी के नाम से जानी गई ने अपने सौतेले पुत्र द्वारका प्रसाद के किसी काम में हस्तक्षेप नहीं किया । जमींदारी से शांतीदेवी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता था। परिणामतः परिवार धीरे-धीरे विपन्न होता गया, महराजिन कही जाने वाली कमलेश्वर की माँ घर चलाने और बच्चों का पेट भरने के लिए कठिन से कठिन कार्य करने लगी । रात को उठकर चक्की पीसना, घर के सारे काम काज करना इनकी दिन-चर्या हो गई थी । पति की मृत्यु के बाद बड़ा

बेटा सिद्धार्थ शहर में कुछ - कुछ काम करने लगा था । लेकिन इसी बीच सिद्धार्थ की भी मृत्यु हो गई । कमलेश्वर के सौतेले बड़े भाई द्वारका प्रसाद अपने को ही सम्पन्न बनाने में लगे रहे । किन्तु द्वारका प्रसाद का परिवार इतना बड़ा था कि उसके भरण - पोषण के लिए उन्हें पैतृक जमींदारी बेच देनी पड़ी । "इस प्रकार माधव प्रसाद का परिवार अभावपूर्ण जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो गया ।

पारिवारिक विषमताओं में कमलेश्वर के व्यक्तित्व को ऐसी आँच मिल रही थी जिसने उन्हें पक्का, मज़बूत और करमठ बना दिया । आगे चलकर कमलेश्वर अपने पैरों पर खड़े हुए और सफलता की एक के बाद एक सीढ़ी लाँघते चले गये । कैशवर्यावस्था में इन्होंने किसी बड़ी उम्र की युवती से प्रेम भी किया, किन्तु वह भी इनके प्रगतिगामी मार्ग को अवरूद्ध न कर सकी ।

कालान्तर में कमलेश्वर ने गायत्री जी से विवाह किया । गायत्री जी ने बम्बई विश्वविद्यालय से "पण्डित माधव राव सप्रे" विषय लेकर हिन्दी में पी.एच.,डी. किया। गायत्री जी ने कमलेश्वर का पूरा साथ दिया । कमलेश्वर जी के एक बेटी है जिसका नाम माधुरी है । उसका विवाह हो चुका है । और उसके भी दो बच्चे हैं। इसी परिवार में कमलेश्वर प्रसन्न हैं ।

§5§ व्यवसायिक जीवन :

कमलेश्वर जी के परिवार की माली हालत अच्छी नहीं थी । अभावों का स्वाद का बचपन में ही चख चुके थे । एक-एक चीज के लिए उन्हें तरसना पड़ता था । चूँकि घर की हालत जानते थे, अतः वे अपनी माँ से कुछ नहीं कह सकते थे । दसवाँ पास करने के उपरान्त कमलेश्वर की भेंट ट्रेन के उन यात्रिओं से हो जाती है जो वस्तुतः क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी के हैं । कमलेश्वर पूरी तरह पार्टी के सदस्य बन जाते हैं । इलाहाबाद आकर वे इन्टर की पढ़ाई करते हैं और साथ ही क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी का काम भी करते हैं । इसी पार्टी के "जनक्रान्ति अखबार" में क्रान्तिकारियों की जीवनियाँ लिखना शुरू करते हैं । कालांतर में क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी के जिम्मेदार व्यक्तियों ने काँग्रेस में शामिल होना स्वीकार कर लिया था । इसकी प्रतिक्रिया कमलेश्वर पर इस प्रकार हुई --

" इस बार मैं पहले से कहीं ज्यादा अपमानित और कहीं अकेला था । इस बार मेरी आस्था ध्वस्त हुई थी ।"(1) बी. ए. करते समय अपना खर्च चलाने के लिए एक पत्रिका के कार्यालय में कमलेश्वर ने काम करना शुरू किया, जहाँ से उन्हें पचास रूपये महिना मिलता था । दुष्यन्तकुमार ने कमलेश्वर के विषय में लिखा है -
" मुझे वे दिन याद हैं जब वह अपने आप में "सर्वोदयी" हो गया था (विनोबा से भी पहले) । साबुन बनाने से लेकर अपनी स्याही तक खुद बनाता था ।"(2) इस समय कमलेश्वर गंभीरता पूर्वक कहानी - लेखन में व्यस्त हो चुके थे । कमलेश्वर ने अपने जीवन-यापन के लिए मैनपुरी के "प्रकाश प्रेस" में प्रूफरीडिंग का काम भी किया था तथा स्थानीय पत्र में यदा कदा कुछ लिखते भी रहते थे । इलाहाबाद में सबसे पहले (पहाड़) पत्रिका में सम्पादक के रूप में कार्य किया । जहाँ से इन्हें पचीस रूपया प्रति मास मिलता था । एक - आध स्थानों पर उन्हें संध्या समय पेंटिंग करने भी जाना पड़ता था जिससे कुछ और पैसे मिल सकें । और परिवार ठीक से गुजर बसर कर सके । उसके साथ - साथ "राजा आर्ट" में कागज के डिब्बों तथा साबुन, पावडर के रैपर्स पर छोटी - छोटी डिज़ाइनें बनाते थे । तात्पर्य यह कि हर स्त्रोत से पैसे प्राप्त करने का यत्न करते थे । सेन्ट जोसेफ्स सेमिनरी (इलाहाबाद) में भारतीय तथा विदेशी कैथलिक ब्रदर्स के लिए हिन्दी अध्यापन करते थे । जहाँ से उन्हें 125 रूपया माहवार मिलता था । इलाहाबाद से ही प्रकाशित "बेहार" मासिक पत्रिका में पचास रूपया प्रतिमाह पर सम्पादन कार्य किया ।

उसके बाद "शहनाज आर्ट साइनबोर्ड पेंटर्स" के यहाँ साइनबोर्ड पेंटिंग, अनियमित तनख्वाह पर काम करते थे । इसी प्रकार बाद में ब्रुकबोण्ड चाय के गोदाम में रातपाली की चौकीदारी ये दूसरे नाम से करते थे । बाद में उन्होंने "कहानी" मासिक पत्रिका में एक सौ रूपया माहवार पर नौकरी की । कमलेश्वर जी की इच्छा संतुष्ट न हो सकी और उन्होंने "कहानी" पत्रिका की नौकरी छोड़ दी तत्पश्चात् "राजकमल" प्रकाशन में साहित्य सम्पादक के रूप में 150 रूपया माहवार पर नौकरी की । उसके बाद "श्रमजीवी प्रकाशन" की शुरूआत की थी । किन्तु बत्तीस हजार का कर्जा चढ़ जाने के कारण वह ठप्प हो गया था । अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें सप्लाई

---

1. "कमलेश्वर" - मधुकर सिंह पृष्ठ-86
2. पूर्वोक्त - पृष्ठ- 88

करके पैसा न पा सकने के कारण भी उन्हें यह प्रकाशन बंद करना पड़ा । इन सब संघर्षों के उपरान्त उन्हें दिल्ली में 1959 में दूरदर्शन में स्क्रिप्ट - राइटर के रूप में नौकरी मिली । किन्तु इतने बड़े शहर में मकान लेकर रहना और वहाँ का खर्च - यह सब उस वक्त उनके बस का नहीं था क्योंकि उनके पास पैसा बिल्कुल नहीं था । इसलिए उन्होंने दूरदर्शन के साहब से अपनी परिस्थिति का इजहार किया । तब साहब ने इलाहाबाद में ही आकाशवाणी में नौकरी पर रखवा दिया । तब आकाशंवाणी और दूरदर्शन एक ही थे ।आकाशंवाणी में 250 रूपया माहवार मिलने लगे । उसके बाद दिल्ली में ट्रान्सफर करवा लिया । और उसमें उन्हें टी. ए. डी. ए. भी मिलने लगा इस प्रकार पैसे की कमी नहीं रही । दूरदर्शन में एक साल नौकरी की क्योंकि उसके बाद उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी । उसका कारण भी कहानी था, कमलेश्वरजी को यह पता नहीं था कि सरकारी नौकर होकर नियम के विरूद्ध कहानी नहीं लिखना चाहिए ।

उसके बाद उन्होंने अपनी रचना का कार्य जारी रखा । उन्होंने 1963 में "नई कहानियाँ" का सम्पादन किया । उसके बाद "इंगित" साप्ताहिक (दिल्ली में ही) का सम्पादन किया । कमलेश्वर जी इस प्रकार सफलता की कसौटी में खरे उतरने लगे । आगे चलकर मार्च 1967 में "सारिका" का सम्पादन किया । जो कमलेश्वर जी के जीवन में महत्वपूर्ण कार्य था । कमलेश्वर जी जीवन में कभी चुप नहीं बैठे । वे लगातार कुछ न कुछ करते रहे। उन्होंने जीवन में, कभी हार नहीं मानी । आगे चलकर सन् 1978 में (श्री वर्षा) नामक पत्रिका का सम्पादन किया । यह पत्रिका गुजराती में निकलती है, उसका अनुवाद भी कमलेश्वर जी ने किया । यही "श्री वर्षा" मराठी में भी निकलती है । इसी बीच कमलेश्वर जी ने सन् 1978 - 80 में "कथा - यात्रा" नामक पत्रिका निकाली । यह पत्रिका छः अंकों में प्रकाशित हुई । इस "कथा-यात्रा" में उनका जो पुराना वाला क्रान्तिकारियों का सम्पर्क था उसी की यादें कहानी के रूप में प्रकाशित कीं । इस पत्रिका के बाद दिल्ली में "गंगा" नामक पत्रिका निकाली तो अरूणा जी ने कमलेश्वर से कहा कि " अगर आप को एतराज न हो तो "गंगा" पत्रिका का सम्पादन आप करो ।" तब कमलेश्वर के पास समय का अभाव था । इसलिए अरूणा जी ने उनसे कहा आप महिने में सिर्फ 10 दिन इस पत्रिका के कार्य के लिए दिया करो ।तब कमलेश्वर ने विचार किया और सन् 1985 में "गंगा" का सम्पादन किया ।

गंगा पत्रिका के सम्पादन कार्य के पहले सन् 1980 में दूरदर्शन में "एडीशनल डाइरेक्टर जनरल" के रूप में किया । यानी जो नौकरी का सिल-सिला है वह दूरदर्शन में सबसे नीचे के पद से. (यानी स्क्रिप्ट राइटर) नौकरी की शुरूआत की थी उसके बाद दूरदर्शन में ही अंत में उपरी पोस्ट (यानी एडीशनल डाइरेक्टर जनरल) पर आये । इस समय दूरदर्शन में "ब्लैक एण्ड व्हाइट" युग को छोड़कर "कलर" के युग में प्रवेश किया । यह अवसर कमलेश्वर जी के लिए बहुत महत्वपूर्ण था ।

दूरदर्शन के बाद यानी सन् 1983 के बाद बम्बई चले गये । बम्बई फिल्म उद्योग में उन्होंने अच्छा काम किया । कमलेश्वर जी का कहना है कि - "फिल्म उद्योग में" दूरदर्शन - लेखन और फिल्म - लेखन की शैली और मुहावरों का प्रयोग करते हुए भी अपनी तकनीक और प्रभावशीलता में एक अलग ही अनुशासन है और अलग तरह का लेखन भी ।" कमलेश्वर जी दूरदर्शन में तकनीक - लेखन सीख चुके थे । इसलिए उन्हें वहाँ कोई दिक्कत महसूस नहीं हुई । फिल्म - उद्योग में साहित्यकारों को काफी तकलीफ होती है । कमलेश्वर जी भी एक साहित्यकार ही हैं उन्हें फिल्म उद्योग में कोई तकलीफ नहीं हुई । उनका कहना है कि - "कोई भी साहित्य-कार हो वह अपने आप को आम औसत आदमी मान कर चले तो कोई परेशानी नहीं होगी" । उनका कहना यह भी है कि "फिल्मों में ऐसा भी होता है कि कई फिल्में बेहूदी भी बनती हैं, और वही बेहूदी फिल्में कॉम्पिटीशन में पहुँचती है तब उन्हें वैसी कहानी लिखनी भी पड़ती है । कमलेश्वर जी ने 76 फिल्मों में लेखन का कार्य किया है । उसमें से (1) "बदनाम बस्ती" फिल्म उनकी "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास पर से बनी । (2) "फिर भी" उनकी "तलाश" कहानी पर से बनी (3) "आँधी" उनकी "काली आँधी" उपन्यास पर से बनी । (4) "मौसम" उनकी "आगामी अतीत" उपन्यास पर से बनी (5) "डाक बँगला" उनकी "डाक बँगला" उपन्यास पर से बनी । इसी प्रकार उन्होंने "अमानुष", घड़ी के दो हाथ", "तुम्हारी कसम", "वही बातें", "मृगतृष्णा", "राम - बलराम" वगैरह फिल्म में संवाद और पटकथा के रूप में लेखन कार्य किया । कमलेश्वर जी का कहना है कि -- " फिल्म एक व्यवसाय का माध्यम होने के नाते हमें इतना अच्छा होने का मौका नहीं मिलता जो हम चाहते हैं, किन्तु इतना तो स्वाभाविक है कि आप अपनी भाषा और तकनीकी जानकारी के माध्यम से दर्शकों तक कुछ तो पहुँचा ही सकते हैं । "

क्योंकि फिल्म एक ऐसा जरिया है कि उसमें शिक्षित होना जरूरी नहीं है । सब लोग फिल्म को देखकर समझ सकते हैं ।

कमलेश्वर जी ने सबसे पहली फिल्म "तलाश" की कहानी लिखी थी । इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था । उन्होंने अन्य फुटकर कार्य भी किये । जैसे कि - आकाशवाणी के लिए उन्होंने लगभग सात सौ स्क्रिप्ट्स का लेखन लिखा । उसके बाद टेलिविजन दिल्ली के लिए लगभग ढाई सौ स्क्रिप्ट्स का लेखन किया । उसके बाद टेलिविजन दिल्ली के लिए समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण किया । टेलिविजन पर साहित्यिक कार्यक्रम "पत्रिका" की शुरूआत भी उन्हों ने की । आकाशवाणी तथा टेलिविजन पर रनिंग कामेंट्री का प्रस्तुतीकरण का कार्य भी किया । भारतीय टेलिविजन के लिए पहली फिल्म - "पन्द्रह अगस्त" का निर्माण भी किया । भिवण्डी (महाराष्ट्र) में हुए हिन्दू - मुस्लिम दंगो पर भारतीय टेलिविजन के लिए फिल्म का निर्माण भी किया । उन्होंने बाँगलादेश मुक्ति - संग्राम में बीस दिन मुक्ति वाहिनी के साथ गुजारे । मुक्ति संग्राम के लिए विदेशों में जाकर प्रचार कार्य भी किया । स्वतन्त्र पार्टी के विरोध में राजस्थान में चुनावों के दौरान प्रगतिशील उम्मीदवारों के लिए प्रचार - कार्य भी किया । आखिर में "दैनिक" और"राष्ट्रीय सहारा" नामक पत्रिका में सम्पादन का कार्य भी किया ।

इस प्रकार कमलेश्वर जी ने व्यावसायिक जीवन का लम्बा सफर तय करके अपने स्वतन्त्र रूप से लेखन की ओर ध्यान केन्द्रित किया । यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर जी को किसी के बंधन में रहकर कार्य करना अनुकूल नहीं लगा । उनका मौलिक कलाकार किसी दूसरे के नियंत्रण या निर्देश का पालन करने में सदैव असमर्थता का अनुभव करता था, अतः वह कभी भी एक स्थान पर टिककर नौकरी नहीं कर सके । नौकरी करते समय न कभी आर्थिक सम्पन्नता ही मिल पाई और न साहित्य - सेवा का सन्तोष । नौकरी छोड़ने के बाद से वे निरन्तर लिखते रहे ।

लेखन की प्रेरणा के बारे में उनका कहना है कि - "मैं स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता, किन्तु जब मैंने एम. ए. इलाहाबाद से किया तब हिन्दी साहित्य के बारे में जान सका । दूसरा कि इलाहाबाद में साहित्यिक माहौल ही था । उस समय इलाहाबाद में महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, निराला, इलाचंद जोशी, इन

सबके पहले डा० गोपाल, हरिवंशराय, विजय प्रसाद, गंगा प्रसाद श्रीवास्तव वगैरह महारथी वहाँ आते थे । उस समय कविता, साहित्य - रचना का जबरदस्त माहौल था । इलाहाबाद सांस्कृतिक नगर कहलाता था । वहाँ रहने से कमलेश्वरजी पर पत्रकारिता का प्रभाव पड़ा । यह शहर एक बौधिक शहर था । वहाँ के लोग कुछ न कुछ नया सोचते रहते थे । जहाँ के सब लोग पढ़ना चाहते थे । कुछ नया काम करना चाहते थे । वहाँ हरेक बात की प्रतियोगिता रहती थी । वहाँ के लोगों को ऐसा था कि हरेक बात की जानकारी होनी चाहिए, इस लिए नहीं कि कोई पूछेगा किन्तु इसलिए कि जानकारी होना जरूरी है । उस समय जो पठन - पाठन का माहौल था तब सिर्फ हिन्दी भाषा का ही ज्ञान नहीं होता था किन्तु अन्य भाषाओं की भी जानकारी रखते थे । बँगला, उर्दू, अंग्रेजी वगैरह भाषा की जानकारी रखते थे । अमेरीका, फ्रैंच, लेटीन वगैरह देशों में क्या हो रहा है उसकी भी जानकारी रखते थे । कमलेश्वरजी ने देखा कि उस समय गद्य की भाषा थी । गद्य में उस समय हिन्दी और उर्दू भाषा में ज्यादा कोई फर्क नहीं था । सिर्फ लिपि का फर्क था । यह सब देखकर उन्होंने रचना लिखना शुरू किया ।

रचना की शुरूआत सन् 1946 -47 के आस - पास शुरू हो चुकी थी । जब वे क्रान्तिकारियों के साथ थे तब उनका चार पन्ने का छोटा सा परचा निकलता था । जिसका नाम "क्रान्तियुग" था जो कानपूर से निकलता था । बाद में इलाहाबाद से निकलने लगा । इस परचे में कमलेश्वर जी ने क्रान्तिकारियों पर छोटी - छोटी जीवनियाँ लिखी । जैसे कि " मामा गाहा मारू जहा " पर लिखा । उसके बाद सन् 1947-48 के आस - पास उन्होंने कहानियाँ लिखना आरम्भ किया । वही सब कहानियाँ "नई कथावस्था" नामक पुस्तक में शामिल हैं । उसमें लगभग 19 कहानियाँ शामिल हैं । यह किताब अभी प्रकाशित होने वाली है । कमलेश्वर जी ने सबसे पहले कहानी ही लिखना प्रारम्भ किया । कविता उन्होंने कभी नहीं लिखी । उनके लेखन में उनकी खुद की सच्चाइयाँ और उनके आस - पास की बातों का ही ज्यादा प्रभाव रहा है । उन पर किसी लेखक या साहित्यकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा । किन्तु प्रेमचंद, यशपाल, नागर इन सबकी कहानी, उपन्यास का प्रभाव कहने मात्र का है लेकिन उन्होंने उनके साहित्य में से कहीं कुछ उठाया नहीं है ।

कमलेश्वर जी ने सन् 1975-76 के आस - पास "सारिका" छोड़कर "समांतर कहानी" का आंदोलन शुरू किया । यह आंदोलन जब तक चलता रहा तब तक उसमें

काम करते रहे । यह आंदोलन बहुत समय तक नहीं चला । क्योंकि हिन्दी कहानियों के बाद एक गुमठा प्रकार की कहानी शुरू हो गई । जैसे कि "छिपकलियाँ, " मिली नई रोशनी ", कॉक्रोच, वगैरह पर कहानी लिखने का सिल-सिला चालू हो गया । "समांतर कहानी " में आम आदमियों के जीवन के बारे में देखने को मिलता है । "समांतर कहानी " आंदोलन के समय की कहानियाँ श्री महेश दर्पण ने अपनी पुस्तक "हिन्दी कथा कोश" में संकलित की हैं । यह पुस्तक कुछ ही दिनों में प्रकाशित होने वाली है । सन् 1954 में प्रेमचंद जी के बड़े बेटे ने "समांतर" पत्रिका निकाली थी, तब उसका प्रादुर्भाव हुआ था । उसके तुरन्त बाद " नई कहानियाँ" नाम की पत्रिका निकली ।

" समांतर कहानी " का प्रभाव लोगों पर तो अच्छा पड़ा किन्तु आलोचकों पर उसका प्रभाव अच्छा नहीं रहा । उस समय एक तरफ प्रादेशिक लेखक संघ था, दूसरी तरफ जनवादी लेखक संघ था और तीसरा जन सांस्कृतिक संघ था । ये सब पार्टी बद्ध सोच के मुताबिक रचनाएं लिखने के आदी थे । उस समय समांतर के विचार पर बहुत आक्रमण था और कमलेश्वर पर काफी आक्रमण हो रहे थे । क्योंकि उस समय मार्कण्डेय जनवादी लेखक संघ से जुड़े हुए थे । मार्कण्डेय और भारद्वाज वगैरह के पत्र आते थे कि वे भी पार्टी में जुड़ जायें । इसके बाद "समकालीन" लेखकों के बारे में कमलेश्वर जी कहते हैं कि – "मेरे जमाने से लेकर अब तक का लेखन बहुत अच्छा रहा रहा है । किन्तु लेखकों की भीड़-भाड़ जरूर रही है ।" उनका कहना है कि "आजकल के लेखकों में रचनात्मकता की कमी जरूर दिखाई देती है । क्योंकि आज का लेखक तत्काल अपना नाम साहित्य में लिखा देना चाहते हैं । यह रचना एक लम्बी दौड़ है । मार्कण्डे, दुष्यन्त कुमार और कमलेश्वर ये तीनों इलाहाबाद में लेखन कार्य कर रहे थे । सब को लगा कि कमलेश्वर लिखना छोड़ देगा किन्तु वे आज भी लिख रहे हैं ।

कमलेश्वर जी से प्रश्न किया गया कि "कहानी" और "उपन्यास" दोनों में से कौन सा सरल है लिखना । तब उन्होंने उत्तर दिया कि "दोनों में से कोई भी रचना सरल नहीं हैं । और कहानी लिखना सबसे कठिन है । यानी जो भी रचना सामने आती है वही कठिन लगने लगती है ।

कमलेश्वर जी के कथा साहित्य में उनकी विचारधारा भी प्रभावित रही है-

मनुष्य के जीवन का शाश्वत सार उसके परिवर्तन तथा कार्य में है । परिवर्तन यानी कुछ नया करने की भावना बलवती रहती है । मरणोपरान्त मनुष्य के विचार ही अन्य लोगों के लिये प्रेरणातत्व का कार्य करते हैं । अतएव कमलेश्वर जी के कथा साहित्य में उनके विचारों और आस - पास का जीवन महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाओं के अध्ययनोपरान्त यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिस्थितियों को देखकर कमलेश्वर जी के मन में जो विचार उत्पन्न हुए और समाज में रहकर उन्होंने जो उतार - चढ़ाव देखे उसका उन्होंने कथानक के चुनने तथा उसे संगठित करने में उपयोग किया है ।

लेखक अपने विचारों को दो प्रकार से व्यक्त करता है । प्रथम स्थान - स्थान पर स्वयं उपस्थित होकर अपने जीवन या पात्रों की आलोचना प्रत्यालोचना प्रस्तुत करता है । इसे स्पष्ट विचाराभिव्यक्ति पद्धति कहते हैं । दूसरे प्रकार की पद्धति को "अप्रत्यक्ष विचाराभिव्यक्ति की पद्धति" कह सकते हैं । इस पद्धति में लेखक स्वयं प्रत्यक्ष नहीं आता है, किन्तु अपने अनुभवों को, विचारों को पात्रों के माध्यम से पाठक के सामने प्रस्तुत करता है । इससे उनके अनुभव और विचारों का स्पष्टीकरण तो हो ही जाता है, साथ ही कथा विकास एवम् चरित्र-चित्रण भी हो जाता है।

(6) विचार धाराएँ :

कमलेश्वर जी अपने कथा - साहित्य में दूसरे प्रकार की पद्धति से अपने विचार और अनुभव को व्यक्त करते हैं । उनकी विचारधारा को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है ।

(1) राजनैतिक विचारधारा ।

(2) सामाजिक विचारधारा ।

(3) प्रगतिशील विचारधारा ।

(1) राजनैतिक विचारधारा :

आज की राजनीति कहाँ पहुँच गई है और मनुष्य कितने हद तक नीचे गिर सकता है उसका सचोट वर्णन कमलेश्वर जी के उपन्यासों में देखने को मिलता है । कमलेश्वर जी की यह इच्छा जरूर रही है कि संसार में भारत का मस्तक ऊँचा रहे, किन्तु आपसी मतभेदों के कारण यह सम्भव नहीं है । उनके "लौटे हुए मुसाफिर"

सफलता का खोखलापन दिखलाते हुए लेखक ने लिखा है कि - "सफलता कितनी क्रूर होती है, कितनी ज़ालिम होती है, इसका नशा कितना गहरा होता है, और खुद अपनी सफलता में व्यक्ति कैसे कैद हो जाता है, इसका जीता जागता उदाहरण है मालती जी ।"﴾1﴿ इस उपन्यास में मालती जी एक प्रतीक के रूप में प्रकट हुई है । "वे हमारी पूँजीवादी व्यवस्था की उन गलत महत्वकांक्षाओं का ही प्रतीक है, जो अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए साधनहीन सामान्य जनों को बहकाने या फुसलाने या उनका इस्तेमाल करने से परहेज नहीं करती ।"﴾2﴿

कमलेश्वर जी अनेक राजनीतिक नेताओं तथा राजनीतिक चिंतकों के सम्पर्क में रहे हैं । राजनैतिक मित्रों में नारायण दत्त तिवारी जो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे बाद में केन्द्रिय मंत्री रहे थे । ये उनके साथ के थे । वी. पी. सिंह और चन्द्रशेखर उनके सहपाठी थे । वीरभद्र प्रतापसिंह का भी साथ रहा । सबसे निकट का साथ और एक दूसरे के घर आने जाने तक का सम्बन्ध नारायण दत्त तिवारी के साथ था। बम्बई में कमलेश्वरजी आये तब ज्यॉर्ज फर्नांडिस, मधु लिमये, एस. ए. डांगे, फिरोझा देशपाण्डे, बलराज सहानी, कैफी आज़मी, सरदार जाफरी, साहिर लुधियानवी आदि के साथ कमलेश्वरजी का सम्बन्ध रहा । ज्यॉर्ज फर्नांडिस से उनका प्यारा सम्बन्ध था । अजीत पटवर्धन, श्रीमती गाँधी, राजीव गाँधी इन सबके साथ उनका राजनैतिक सम्बन्ध था । नरसिंह राव से उनका बहुत सम्पर्क तो नहीं है किन्तु जब नरसिंह राव आँध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री थे तब तेलगु लेखक सम्मेलन में सात दिन तक उनके साथ रहे थे। उसके बाद शिवराज पाटील, सुशील कुमार शिंदे, अटलबिहारी बाजपेयी, गुजराल सबके साथ उनका सम्पर्क रहा । यह बात निश्चय है कि कमलेश्वरजी का सम्बन्ध किसी एक पार्टी से नहीं था । उन्हें जो अच्छा और सही लगता था उसी के साथ उनका सम्पर्क स्थायी रहा ।

﴾2﴿ सामाजिक विचारधारा :

कमलेश्वर जी ने मध्यम वर्ग, के संघर्ष स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, नारी-स्वातंत्र्य, एवं समानाधिकार आदि विषयों पर विस्तार पूर्वक अपने विचार प्रस्तुत किये हैं ।

---

1. कमलेश्वर : "काली आँधी" पृष्ठ-15
2. मधुकरसिंह : "कमलेश्वर" पृष्ठ- 194

कमलेश्वर जी ने "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में मध्यम वर्ग के संघर्ष को यथार्थ रूप में प्रकट किया है । श्यामलाल की नौकरी छूट जाती है । उसके बाद उनके पास आजीविका चलाने का कोई भी साधन नहीं बचता । इस आर्थिक संघर्ष के कारण बिखराव उत्पन्न हो जाता है। आर्थिक संघर्ष इतना बढ़ चुका था कि भोजन तक की भी व्यवस्था ठीक से नहीं हो पाती थी - "रसोई में एक चीज़ होती तो दस खत्म हो चुकी होतीं । कोई भी चीज़ पकाने चलती, तो शायद ही कभी पूरा और सही मसाला निकल पाता । जोड़-तोड़ करते उसका जी खिसिया जाता था । हमेशा यही तमन्ना रहती कि एक बार तो वह कायदे से कोई चीज़ पका सके ..... लेकिन इसकी नौबत नहीं आतीथी "(1) बीरेन के लापता होने की खबर से परिवार का मेरुदंड ही टूट गया था । श्यामलाल बिलकुल असहाय हो गए थे तथा उनमें निरर्थकता बोध भी उभर आया था । उन्हें लगता कि अब कैसे जिएं- "हजारों, लाखों, करोड़ों की आबादी में वे बिलकुल तनहा और फालतू हो गए है ... किसी को उनकी जरूरत नहीं .... कोई ऐसा नहीं, जो उनकी सुने । पति के रूप में बस पति भर रह गए हैं .... एक ज़बर्दस्ती का बोझ और पिता के रूप में सिर्फ पिता कहे जाने भर का सवाल रह गया है । इन दोनों ही रिश्तों का कोई अर्थ उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था ।"(2) मध्यवर्गीय समाज में जीवन की सुख - सुविधाएं प्राप्त करने की इच्छा ही संयुक्त परिवारों की संस्था को तोड़ रही है । "तीसरा आदमी" उपन्यास में भी परिवार एक संकुचित इकाई के रूप में उभरा है । नरेश भी अपनी पत्नी चित्रा को अपने साथ दिल्ली ले आता है लेकिन आर्थिक विषमताओं के कारण वह सुखी जीवन नहीं बिता पाता । गुज़ारा चलाने के लिए चित्रा को काम करना पड़ता है । वह काम उसे सुमन्त के कारण मिलता है। सुमन्त तथा चित्रा का नैकट्य नरेश के परिवार को छिन्न-भिन्न करके रख देता है । यह उपन्यास मुख्य रूप से विघटन की कहानी कहता है । असफल दाम्पत्य के इर्द-गिर्द नर - नारी सम्बन्धों की ऐसी भूमिका बुनी गई है, जिसमें काम - संदर्भ अनुपस्थित होकर भी नर - नारी सम्बन्ध के केन्द्र पर आकर दकियानूस बन जाता है और उसे यौन - सम्बन्ध के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता है ।

---

1. कमलेश्वर : "समुद्र में खोया हुआ आदमी " पृ0-1
2. पूर्वोक्त : पृष्ठ- 70

नारी - स्वातन्त्र्य तथा समानाधिकार के प्रश्न से कमलेश्वर जी सहमत हैं। वे मानते हैं कि नारी को स्वातन्त्र्य अवश्य मिलना चाहिए, किन्तु उसका उसे दुरूपयोग नहीं करना चाहिए । प्राय: अधिक स्वातन्त्र्य का दुष्परिणाम अनेक नारियों को भुगतना पड़ा है । "डाक बंगला" उपन्यास में "इरा" और विमल अपनी रूचि से जीवन जीते । और न ही शीला अपना जीवन बर्बाद करती । "इरा" साफ - साफ इस स्थिति को प्रकट करते हुए कहती है, - "यह तुम्हारी दुनियाँ बहुत कमीनी है । यहाँ औरत बगैर आदमी के रह ही नहीं सकती । चाहे उसका पति हो या भाई या बाप । कोई न हो तो नौकर ही हो । पर आदमी की छाया जरूर चाहिए। यह कैसा विधान है ? तुम इसे नहीं समझ सकते, क्योंकि तुम औरत नहीं हो । पर मैंने बड़ी गहराई से इसे महसूस किया है ।"(1) "आगामी अतीत" उपन्यास में समाज में एक अन्य घिनौना तत्व अभी भी विद्यमान है जो कि हमारे समाज में विकृतियों व असामाजिक तत्वों को अवलम्ब देता है । पागल खाने में पागल बनकर रह रहा एक अपराधी चाँदनी की इज्जत पर हाथ डालता है और वह बेचारी अपनी माँ की लाश और विवशता के कारण विद्रोह नहीं कर पाती । अंतत: उसे वहीं घिनौना रास्ता अपनाना पड़ता है । वास्तव में समाज में शायद कुछ ऐसे ही तत्व हैं जो इन बुराइयों को जन्म देते हैं । और वही बुराइयां वेश्या बनकर समाज के सामने उपस्थित हो जाती है । उन वेश्याओं के जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है इसका कमलेश्वर जी ने " आगामी अतीत " में स्पष्ट चित्रण किया है ।

" चले आते हैं मरदुए । इश्क लड़ायेंगें .... अबे, यहाँ धन्धा होता है, धन्धा ! इश्क नहीं .... अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुख्ता करे आना .... "(2)

इस प्रकार नारी स्वातंत्र्य का दुष्परिणाम अनेक नारिओं को भुगतना पड़ता है ।

कमलेश्वर जी के "माँस का दरिया" कहानी में नारी जाति का किस प्रकार पूँजीवादी वर्ग शोषण करता है इसका स्पष्ट चित्रण देखने को मिलता है । इस कहानी में नारी की इच्छा न होने पर भी वह दूसरे आदमी को खुश रखती है ।

---

1. कमलेश्वर : डाक बँगला, पृष्ठ - 35
2. कमलेश्वर : आगामी अतीत, पृष्ठ-68

जहाँ तक नारी का शरीर स्वस्थ और सुंदर रहता है तब तक उस पर नोटों की बौछार होती हैं । किन्तु उसी नारी को कोई रोग हो जाए और शरीर काम न करे तब उसे सामने कोई देखता नहीं है और न ही उसे कोई पैसों की मदद करता है । यही समाज की प्रक्रिया है ।

§3§ प्रगतिशील विचार धारा :

कमलेश्वर जी के मन में यह बात बनी रहती है कि समाज में कुछ नया होता रहे - समाज आगे बढ़ता रहे । कमलेश्वर जी ने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास में मध्यमवर्गीय समाज के यथार्थ रूप को प्रस्तुत करते हुए अनेक परंपराओं के प्रति विद्रोह प्रकट किया है तथा अनेक नए मूल्यों की स्थापना पर जोर दिया है । कस्बाई समाज में व्याप्त विद्रूपताओं का यथार्थ चित्रण ही इस उपन्यास का आकर्षण है । विभिन्न वर्गों में जागृति आई है । जब सब मिलकर यूनियन बनाने को तैयार होते हैं तब सरनाम कहता है कि कस्बे में चल रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ़ विद्रोह करे। इस कथन से स्पष्ट होता है कि मध्यमवर्गी व्यक्ति चाहता है कि वह इन सब का विद्रोह करे । इस वर्ग से संघर्ष करके ही तर्क करने की चेतना प्राप्त की है । मज़दूर भी पूँजीपतियों के विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं तथा विद्रोह का स्वर उठाते हैं । सरनाम सिंह समाज में बराबरी लाने के लिए तर्क देता है कि पूँजीपतियों, जातिवाद व समाज के खोखलेपन को समाप्त करना होगा । वह कहता है, "यहाँ किसी मालिक की छत ऊँची नहीं है, किसी सेठ का मकान चमचमाता हुआ नहीं पर हर ब्राह्मण की इज्ज़त ऊँची है, हर कायस्थ का माथा चमचमाता हुआ है, हर क्षत्रिय की नाक ऊँची है, हर इस झूठी इज्ज़त को धूल में मिलाइए, इस चमचमाते खोखले माथे को झुकाइए, उन ऊँची नाकों को काटिए - तब बराबरी होगी।"§1§

कमलेश्वर जी की प्रगतिशील विचारधारा मार्क्स के सिद्धान्त से प्रभावित हुई है । और प्रगतिशील लेखक संघ का सम्मेलन 1936 में पहली बार हुआ था । उस सम्मेलन में प्रेमचंद जी ने सभा पति का स्थान संभाला था । प्रेमचंद जी का या कहें उस सम्मेलन से आगे चलकर कमलेश्वर जी अनुप्रेषित हुए तथा प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े रहे । कमलेश्वर जी किसी पार्टी के सदस्य नहीं थे । पार्टी आदेश दे तो ही लिखें ऐसा नहीं था ।

वे आत्मप्रेरणा व अपने परिवेश से प्रभावित होकर लिखते थे । उनकी प्रगतिशील

---

1. कमलेश्वर : "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" पृ0-74

विचार धारा का उत्स इलाहाबाद का बौद्धिक वातावरण था ।

§2§ कमलेश्वर का व्यक्तित्व - वाह्य पक्ष :

जीवन में कभी न झुकनेवाला, किसी से हार न मानने वाला, जीवन से मुँह न मोड़ने वाला तथा दूसरों को सदैव प्रभावित करने वाला कमलेश्वरजी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रखर एवं तेजस्वी है । कमलेश्वर जी में ऐसे कौन - से गुण है जो अनायास ही अपने सामने वाले को आकर्षित करते हैं । इन गुणों की विवेचना करने के पूर्व व्यक्तित्व क्या है ? इस सम्बन्ध में कुछ सामान्य चर्चा कर लेना समीचीन प्रतीत होता है ।

अलबर्ट एडवर्ड विग्गम के अनुसार -- मनुष्य में जो रुचि, तथा दूसरों की सेवा करने की भावना होती है वही "व्यक्तित्व" है ।

उपर्युक्त सन्दर्भ में व्यक्त्त्व की जो परिभाषा दी गई है वह अत्यन्त संकुचित है । व्यक्तित्व की इससे अधिक उचित परिभाषा देने का प्रयत्न सुप्रसिद्ध मनो - वैज्ञानिक म्यूरहेड ने किया है । वे लिखते हैं --

" व्यक्तित्व में सम्पूर्ण व्यक्ति का समावेश होता है । व्यक्ति के गठन, रुचि के प्रकारों, अभिरुचियों, व्यवहार, क्षमताओं, योग्यताओं और प्रवणताओं का सबसे निराला संगठन है ।"§1§

व्यक्तित्व को अंग्रेजी शब्द में "पर्सनैलिटी"(Personality) का निर्माण लैटिन शब्द "परसोना" (Persona) से हुआ है ।

---

1. Most people believe you are born with either a good or a poor personality, Eig8t psychologists however, under the direction of Dr.Henry C.Link of the psychological Corporation of America, have concluded from a nation wide experiment, to at you can learn how to acquire a good personality. These psychologists define personality as the degree to with you interest, influence and serve other people', New techniques of Hoppiress by Albert Edward wiggam.

जिसका तात्पर्य उस "मास्क" (Mask) अर्थात् बुरके से है जिसे अभिनेता रंगमंच पर अभिनय करते समय पहनते थे और उस बुरके के द्वारा अपने पृथक् व्यक्तित्व का प्रभाव दर्शक पर डालते थे । पर्सनैलिटी या व्यक्तित्व का अर्थ इसी समग्र प्रभाव का द्योतन करता है । पाश्चात्य विद्वान डेशियल (Dashiell) ने लिखा है - " An individual's personality is the total picture of his organized behaviour, espcilty as it can be characterized by his fellow men in a consistent way "

व्यक्ति के सम्पूर्ण आचरण के समग्र चित्र" को अधिक स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक नारमन एल. मन ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है - "Personality may be defined as the most characteristic integration of an individual's structures, made of behaviour, interests, attitudes, capacities, abilities and aptitudes."

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि व्यक्ति के विभिन्न गुणों, आकार - प्रकार, रूप रंग, व्यवहार, अभिरुचियाँ, दृष्टिकोणों, योग्यताओं एवं क्षमताओं की समष्टि से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है । अतः हम कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों पर अपनी दीर्घकालिक जो भी छाप छोड़ता है, वही उसका व्यक्तित्व है ।

व्यक्तित्व के दो पक्ष हो सकते हैं — एक बाह्य पक्ष, दूसरा आन्तरिक पक्ष । इन्हीं दोनों पक्षों के परिप्रेक्ष्य में हम कमलेश्वर जी व्यक्तित्व का अनुशीलन करेंगे ।

(क) <u>बाह्य पक्ष</u> :- व्यक्तित्व का बाह्य पक्ष में शारीरिक गठन, वेशभूषा, रहन-सहन, अभिरुचियाँ, दिनचर्या, व्यसन - व्यवहार, वैयक्तिक चेतना आदि से सम्बन्ध है, अतः कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व के बाहय स्वरूप के विश्लेषण में इन्हें केन्द्र में रखना होगा ।

कमलेश्वर जी की बाहय रूपाकृति में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उन्हें असाधारण अथवा असामान्य सिद्ध करे, किन्तु कुछ ऐसा अवश्य है जो अपने सम्पर्क में आनेवालों को अपनी ओर आकर्षित करता है । सामान्य नाटा कद, गेहुँआ वर्ण, उन्नत ललाट,

---

1. डॉ० इन्दु शुक्ला - भगवती चरण वर्मा और उनका कथा साहित्य -पृ०-15
   (Elizabeth B.Hurlock; Child Development - P.531
2. पूर्वोक्त : Norman L. munn; Psychology - P. 457

भरावदार बाल, आँखों पर चश्मा, मधुर आवाज, रहस्यमयी मुस्कान से आलोकित मोटा मुख और उस मुस्कान के स्त्रोत वे नयन, साठ साल की उम्र में भी शरीर में ताजगी - यही कमलेश्वर जी की बाह्य छवि है ।

तमिल तथा हिन्दी के विख्यात लेखक शौरिराजन की निगाह में कमलेश्वर -- " एक दक्खिनी किसान का जवान लड़का । वही चुस्ती । जिन्दादिली । वही मेहनत परस्ती, वही सादगी, वही चातुरी, वही भावुकता, वही हिम्मत, वही वाचालता, वही आत्मविश्वास, वही स्वाभिमान, वही स्नेहशील शालीन प्रकृति । मैंने समझ रखा था कि यह कथा - लेखन के सिवा और कुछ नहीं जानता । लेकिन धीरे - धीरे पता चला कि इसका अध्ययन इतना विशाल, गहरा और विविध है कि कोई विषय इसकी समझ से परे नहीं है ।(1)" कश्मीरी, उर्दू तथा हिन्दी के विख्यात कथाकार श्री हरिकृष्ण कौल का कहना है कि कमलेश्वर "एक अज़ीम और पुरकशिश शख्सियत का मालिक है । आम हिन्दुस्तानी साँवली सलोनी सूरत के बावजूद जिसके नुकूश तीखे हैं । निस्बतन छोटे कद के बावजूद जो अपने साथियों में हर लिहाज़ से ऊँचा ही नज़र आता है । जिसकी इना (अहं) साफ़ है, सोच में कोई उलझन नहीं, इज़हार में कोई इबहम (अमूर्तता) नहीं, बातों में लताफत और नज़ाकत का हसीन इम्तियाज़ (मिश्रण), मसाइल का सही तर्जुबा करने की ऐसी सलाहित कि सारा माहौल मुनव्वर (रौशन) हो जाये, ज़िन्दादिली की ऐसी महक कि गिरदों पेश मुअत्तर (वातावरण महक उठे) हो जायें । तन्ज की ऐसी चुभन कि दिल में चुभकर रह जाय । पास खड़े यार - दोस्तों के मुँह से हँसी की फुलझड़ियाँ फूट पड़े और फिर सबकी हँसी को डुबोता उसका ज़ोरदार कहकहा फ़िज़ाँ में गूँज उठे ।"(1)

वास्तविकता तो यह है कि कमलेश्वर की आँखों की चमक, उनमें आत्मविश्वास, मधुर आवाज ही वह चीज है जो सामने वाले को अपनी ओर आकर्षित करती है । उनकी आँखों में एक प्रकार की तेजस्विता तो झलकती ही रहती है, साथ ही साठ वर्ष की अवस्था में भी उनकी चेतनता एवं तत्परता देखने लायक रही है । इस उम्र में भी किसी प्रकार के आलस्य और शैथिल्य के दर्शन उनमें नहीं हुए । उनके कार्य - व्यापार में ऐसी स्फूर्ति और तेजी दिखती रही हो नवयुवकों के लिए भी प्रेरणादायक है ।

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह पृष्ठ- 378

इन पंक्तियों को लिखते समय हमें वह सुबह का समय याद आ जाता है जब उनसे मिलने गए थे । लगभग डेढ़ - दो घण्टे लगातार विभिन्न विषयों पर वार्तालाप होता रहा । वार्तालाप हो जाने पर जब हमने उनके कीमती समय के लिए धन्यवाद कहा तब वे हँसकर कहने लगे कि -- " अरे आप तो इतना बड़ा काम कर रही हो तो क्या मैं इतनी सहायता भी नहीं कर सकता ? कुन्ता तुम्हें कोई तकलीफ हो तो मुझसे फोन करके या पत्र के जरिए पूछ लेना ।" हम उनके घर से जैसे ही चलने की तैयारी करने लगे कि वे अंदर के रूम में जाकर नाईट ड्रेस बदलकर कुर्ता-पैजामा पहन कर तैयार होकर किसी को मिलने का समय दिया था इसलिए बिना किसी तैयारी के इतनी तत्परता से हमारे साथ ही अपनी कार लेकर चल दिये, मानों पहले से वहाँ जाने के लिए तैयार हुए हैं।उनकी इस स्फूर्ति एवं ताजगी के सम्बन्ध में उनके मित्र राजेन्द्र यादव कहा करते हैं -- "यार इस आदमी में कितना स्टैमिना है ! दिन भर घूम सकता है, बैल की तरह काम कर सकता है रात - भर जागकर दोस्तों के साथ ठहाके लगा सकता है, फिर भी चेहरे पर थकान या शिकन नहीं । जाने किस चक्की का पिसा खाता है।"(1)
राजेन्द्र यादव को जब मन्नू भण्डारी द्वारा सम्पादित "नई कहानियाँ" के विशेषांक में अपनी कहानी प्राप्त करने के लिए जब यादव ने कमलेश्वर को घेर लिया तो वें कलम लेकर बैठ गये । और बोले -- "अच्छा, तुम शेव करो, मैं कहानी शुरू करता हूँ।" और उसने कहानी शुरू कर दी । राजेन्द्र यादव ने शेव का सामान सामने रखा तो वह बोला -- "राजेन्द्र, देख, नायिका दरवाज़े पर आ गयी । " यादव ने जब तक शेव का पानी गरम किया, वह बोला - "देख, अब वातावरण डाल रहा हूँ ।" और उसने वातावरण डाल दिया । यादव ने शेव समाप्त किया तो वह बोला -- " अब एक स्थिति समाप्त हो गयी है । "

और जब तक राजेन्द्र यादव ने अपनी आदत के मुताबिक चार-पाँच "ऐतिहासिक पत्र" लिखे, नहाया और कपड़े पहन कर तैयार हुआ, तब तक कमलेश्वर ने कहानी पूरी करके यादव को थमा दी । कहानी थी - "जो लिखा नहीं जाता" और यादव ध्वस्त होकर रह गया।"(2) अरविन्द कुमार कमलेश्वर जी को "आदर्श पुरुष" मानते हैं ।

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह पृष्ठ- 91
2. कमलेश्वर : मधुकर सिंह पृष्ठ- 91

§1§ वेश भूषा :- जीवन की भिन्न अवस्थाओं के अनुसार मनुष्य के परिधान में अन्तर आता है । उस पर ऋतु, फैशन, वातावरण आदि का भी प्रभाव पड़ता है। कमलेश्वर जी की उपर्युक्त ताजगी एवं स्फूर्ति का कुछ श्रेय उनकी सहज - सरल, किन्तु लकदक वेशभूषा को भी है । कमलेश्वर जी ज्यादातर पैंट - शर्ट और कुरता - पायजामा ही पहनते हैं । उन्हें स्वच्छ बढ़िया धुला हुआ कपड़ा ज्यादा ताज़गी एवं गरिमा देता है । जब फिल्म क्षेत्र में थे तब वे कोड्राय का पैंट भी पहनते थे । रात को सिल्क का नाईट ड्रेस पहनते हैं । उन्हें टाईट कपड़े पसंद नहीं है । उन्हें ऐसे कपड़े पसन्द है जिसमें शरीर को आराम मिले । उन्हें हलके रंग के कपड़े ज्यादा पसन्द है । उनकी पत्नी गायत्री जी का कहना है कि " उन्हें सबसे ज्यादा हरा और नीला रंग पसन्द है ।

शीत ऋतु में स्वेटर एवं मफ़लर पहनना तो स्वाभाविक ही रहा है । और पैरों में कभी जूते और कभी चप्पल पहनते हैं ।

§2§ रहन - सहन :

कमलेश्वर जी के दादा जी और पिता जी का सम्बन्ध राजा चैतसिंह के साथ था जो बनारस में बंदी बनाये गये थे । उनके यहाँ भवनों का निर्माण भी करते थे । और राजा ने मैनपूरी में दो खेत खर्चे के लिए दी थी । इसलिए राजा के रहन - सहन का असर भी जरूर पड़ा । किन्तु बाल्यकाल में पिता की मृत्यु के पश्चात् कमलेश्वर जी के कन्धों पर परिवार के भरण-पोषण का बोझ आ पड़ा । आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर बम्बई में जूहू के पास 1020 वर्ग फुट के प्लॉट पर उन्होंने शानदार बँगला बनवाया है जहाँ रहकर वे साहित्य रचना करते थे, उन्हें वहाँ शाँति भी मिलती थी । वह बँगला अभी भी वहाँ है । दिल्ली में आ जाने के बाद उन्होंने सुरजकुंड के पास बी/116 एरोस गर्डन में शानदार मकान लिया है । वह स्थान भी शान्त है । यह मकान सुव्यवस्थित एवं सुसज्जित है । उनके मकान का ड्राइंग रूम सोफा, मेज, कुर्सी से सजा है । दूसरे कमरे में लायब्रेरी बनी हुई है। यह भी एक रोचकता है । सुसज्जित रसोई है जिसमें रसोई की हरेक चीज उपलब्ध है । तीसरा रूम जो उनका बेडरूम है वह भी सजा हुआ है । मेहमान के लिए ऊपर रूम है वह भी सजा हुआ है । उनके घर में फोन है उस फोन के हरेक रूम में कनेक्शन है। अगर बिजली चली जाए तो जनरेटर भी है ।

मकान की छत पर तरह - तरह के पेड़ - पौधे लगाये हैं । हरी सब्जियाँ भी लगाई है । उनके मकान में सुख - सुविधा की हरेक चीज उपलब्ध है । यह सब देखकर ऐसा लगता है कि उन्हें करीने से रहने का काफी शौक है । उन्हें खाने-पीने और साथ ही खिलाने का भी अत्यधिक शौक है । उनकी माता जी बहुत अच्छा खाना बनाने की शौकीन थी । इसलिए कमलेश्वर जी को यदि खाने में अपने पसंद की चीज न मिले तो पेट नहीं भरता है । अपने मित्रों, मिलने - जुलने वालों तथा अतिथियों का सत्कार वे जिस प्रकार सुस्वादु भोजन एवं चाय - नाश्ते से करते हैं। उससे उनकी आतिथ्य - सत्कार की भावना का पता तो चलता ही है, साथ ही उनके रहन - सहन के स्तर का ज्ञान भी हो जाता है । सुरुचि उनकी विशेषता है । पैसा उनके पास टिकता नहीं है । पास के पचास किसी को देकर अपनी जरूरत के लिए पचीस रूपये के लिए घूमते हुए मिल सकते हैं । यह बात तब की है जब उनकी आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी ।

§3§ अभिरुचियाँ :

हिन्दी साहित्य का प्रख्यात एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार अपने व्यक्तिगत जीवन में बड़ा ही सुलझा हुआ व्यक्ति रहा है । संस्कृत में कहा गया है कि -- " भिन्न रुचि हि लोकः।" तदनुसार व्यक्तियों की रुचियों में अन्तर होना स्वाभाविक है । मनोरंजन और शौक की परिधि कमलेश्वर जी की बहुत बड़ी है। वेश भूषा में अत्यन्त सादे वस्त्र उन्हें प्रिय है । जो शरीर को आराम दे सके, उसे प्रत्येक ऋतु में आवश्यकता भर ढक सकें । पोषाक से ज्यादा उन्हें तरह - तरह के व्यंजन खाने का शौक है । सबसे ज्यादा चाईनीश डीस पसंद है । तंदूर में तंदूरी रोटी को छोड़कर उन्हें तंदूर का नोनवेज बहुत पसंद है । अगर उन्हें खाना अच्छा न मिले तो पेट नहीं भरता । खाने में उन्हें अपनी मन पसंद की एक चीज तो चाहिए चाहे कोई भी चीज हो । व्यसन में कमलेश्वर जी को सिगरेट ज्यादा पसंद है । जब वे पढ़ाई करते थे तब से वे सिगरेट पीते हैं । पहले तो दिन में साठ सिगरेट पीते थे । बाद में हार्ट की तकलीफ हो जाने पर सिगरेट पीना कम हो गया । फिर भी कभी - कभी क्लब में जाते तो सिगरेट पीना चालू हो जाता । तब वे दिन में दस - बारह सिगरेट पीते । एक दिन नातिन ने कहा नानाजी सिगरेट नहीं पीते !

तब वे नातिन से कहते कि अच्छा अब मैं नहीं पीऊँगा । दो - तीन दिन नहीं होते कि सिगरेट पीना चालू हो जाते । बाद में दिन में वे चार - पाँच सिगरेट पी लेते हैं । उन्हें दोस्तों से मिलना और उनकी खाल उधेड़ना, चुटकुले और लतीफे गढ़ना अच्छा लगता है । और दोस्तों के बीच रहकर नयी - पुरानी बदमाशियों के बारे में बात करना, दस्तूरी चिट्ठियाँ लिखना, घर के काम - काज में दिलचस्पी लेना, दोस्तों की महफ़िलों में जाना, किसी बीमार के पास जाकर सिरहाने बैठना, किसी भी सस्ती - सी दुकान में चाय पीना, बड़े होटल में खाना खाना यह सब बहुत पसन्द है ।

उन्हें खेल - कूद में भी रुचि है । उनका सबसे प्रिय खेल "हॉकी" है । टी.वी. पर कोई भी मैच दिखाया जा रहा है तो उसे वे शौक से देखते हैं । उन्हें दिन में बारह घंटे में चौबीस घंटे का काम करना ज्यादा पसन्द है । उन्हें रचनाएँ लिखना, कस्बों में जाकर कहानी का प्लोट लाना, वहाँ के लोगों का रहन - सहन ये सब बहुत पसन्द था इसलिए वे बार-बार मैनपुरी जाते थे । शाम को ज्यादातर अकेला रहना और लिखना रुचिकर लगता है । उनकी आदतों के बारे में दुष्यन्त कुमार का कहना है कि -- "उनकी इस आदत की वजह से सड़क पर चलना मुश्किल हो जाता है -- रास्ते में उसे जो भी "राही जी", "पीड़ितजी", "व्यथितजी", बेकलःजी" या "गुमनाम जी" मिलेंगे, वह सबके लिए "एक मिनट दुष्यन्त" कहकर अटक जाता है ।"(1)

कमलेश्वर जी की रुचि किसी एक कार्य में नहीं है । वे कई काम एक साथ करते हैं -- जैसे "कहानियाँ, उपन्यास लिखता है, एडीटरी करता है, आन्दोलन चलाता है, टी.वी. पर कार्यक्रम देता है, फिल्में लिखता है ..... सब बड़ी खूबी से करता है ।"(2)

कमलेश्वर जी को ड्रॉइंग में बड़ी रुचि है । वे पेईंटींग बनाने में माहिर थे। कमलेश्वर जी का कहना है कि -- "अगर मैं साहित्यकार न होता तो एक अच्छा पेन्टर जरूर होता ।" (3)

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह पृष्ठ- 49
2. पूर्वोक्त : पृष्ठ- 101
3. पूर्वोक्त : पृष्ठ- 101

उन्हें देश - विदेश घुमने का बड़ा शौक है । देश विदेश में मिडिलईस्ट, अरब देश, उत्तर अमेरीका और यूरोप वे पूरा घूमे हैं । कुछ समाजवादी देशों में भी गये हैं, जैसे चीन, 1990 में हाँगकाँग वगैरह घूम चुके हैं । उन्हें देश - विदेश की किसी भी लड़ाई या आंदोलन में शामिल होना पसन्द है । उन्हें ताश खेलना भी अच्छा लगता है । इसलिए वे क्लब भी जाते हैं ।

कमलेश्वर जी को पेड़ - पौधों का बहुत शौक है । उन्होंने अपने घर की छत पर तरह - तरह के पेड़ - पौधे और सब्जियाँ लगाई है और उसकी देखभाल खुद ही करते हैं । कमलेश्वर जी ट्रक पर माल लदवा कर दूसरी जगह पहुँचाने का काम करते थे उस समय की बात सन् 1964 में लिखित और प्रकाशित : "सारिका" में स्पष्ट हुई है कि - "कंकरीली जमीन साफ कर - कर सब्जियाँ बना लेते हैं । कोई-कोई जंगली - फूलों का एक पौधा भी रोप लेता है । "(1)

कमलेश्वर जी को दिन - रात मेहनत करना रुचिकर लगता है । इस सम्बन्ध में अरविन्द कुमार ने कहा है कि — "मुझे कमलेश्वर हिन्दुस्तान का ख्वाजा नसरुदीन लगता रहा है । जाने क्यों ख्वाजा नसरुदीन की जो तस्वीरें मेरे दिमाग में बहत्तर घंटे बना देने वाला हद दरजे का मेहनती, हर काम को बढ़िया तरीके से करने वाला ... । और बहुत सी बातों के साथ दिन में सैकड़ो चिट्ठियाँ लिखने वाला ... । कितनी चिट्ठियाँ लिखता है वह ।"(2)

नवोदित साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने में भी कमलेश्वर जी की विशेष रुचि है । वे उनकी प्रगति के लिए क्या कुछ नहीं करते । कभी - कभी पैसों से भी उनकी सहायता करते थे । उनकी यह रुचि उनकी अतिशय उदारता एवं सदाशयता की परिचायक है ।

इस प्रकार कमलेश्वर जी का जीवन बहुरंगी अभिरुचियाँ अवोच्छिन्न रहा है । रसायन शास्त्र से लेकर गृहशास्त्र तक में उनकी रुचि रही है । जीवन की तमाम कठिनाइयों को उन्होंने अपनी विभिन्न गतिविधियों में डुबो दिया है । अपनी विभिन्न रुचियों में की । वे इतने व्यस्त रहते रहे कि जीवन की कटुता भी उन्हें मधुर लगने लगी ।

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह - पृ0-85
2. पूर्वोक्त : पृष्ठ - 98

§4§ दिन चर्या :

कमलेश्वर जी की दिनचर्या की सामान्य बातों का उल्लेख करना तो यहाँ अनावश्यक होगा, किन्तु एक साहित्यकार होने के नाते उनकी लेखन सम्बन्धी दिनचर्या की चर्चा करना अत्यंत आवश्यक है । नौकरी करते समय की दिनचर्या दुष्यन्त कुमार की दृष्टि में इस प्रकार रही है -- " इलाहाबाद में प्रायः रोज रात को ग्यारह - बारह बजे तक मेरे तथा अन्य दोस्तों के साथ गप्पे लड़ाया करता था । रात को देर - देर तक लिखा करता था और सुबह फिर उसी ताज़गी और उत्साह से दिनचर्या शुरू हो जाती थी । उसी चुस्ती और उल्लास से वह अपनी छकड़ा साइकिल उठाता, तीन मील उलटा चलकर मेरे पास आता, मेरे अहदीपन पर लानत भेजते हुए खुद चाय बनाता, फिर तीन मील यूनिर्वसिटी का सफ़र तय करता, दोपहर को जोजेफ्स सेमिनरी में कैथेलिक पादरियों को पढ़ाने जाता, शाम को एक खास रास्ते से गुजरकर अपनी प्रेमिका से मिलता और फिर सिविल लाइन्स में दोस्तों से आ मिलता । इस तरह रोज़ाना बीस - बाइस मील का चक्कर काटकर रात को पहुँचता तो उसके दिमाग में केवल दो बातें होती - भाई साहब की प्यार भरी डाँट और कहानी प्लॉट । "§1§

यह रही नौकरी करते समय की कमलेश्वर की दिनचर्या, अब नौकरी पश्चात की दिनचर्या की चर्चा भी कर लें । कमलेश्वर जी की दिनचर्या के बारे में उनकी पत्नी श्रीमती गायत्री जी का कहना है -- "अब वे सुबह छः बजे उठते हैं और उठकर सीधे बाथरूम जाते हैं, बाद में चाय पीते हैं । चाय पीते समय अखबार पढ़ते हैं । अखबार की एक - एक चीज जहाँ तक पढ़ न लें उसे छोड़ते नहीं है । फिर नाश्ता करते हैं । और नौ या साढ़े नौ बजे सोचे हुए प्लोट के मुताबिक लिखने बैठ जाते हैं । लेखन कार्य करने के लिए उन्हें किसी विशेष वातावरण की जरूर नहीं पड़ती, किन्तु शांति जरूर चाहिए, कोलाहल बिलकुल पसन्द नहीं करते । वे अपने कमरे में ही बैठकर लिखते हैं । लेखन कार्य करने में एकदम शांति मिले इसलिए जब बम्बई में थे तब उन्होंने जू के पास बँगला लिया था । और अभी दिल्ली रहते हैं तो सूरज कुंड के पास मकान है जहाँ उन्हें शांति मिलती है । लेखन कार्य करते समय सबसे पहले प्लोट के बारे में विचार करते हैं और अगर प्लोट हो तो पात्रों

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह - पृ0 90

के चरित्र – चित्रण के बारे में विचार करते हैं । यह लेखन कार्य दोपहर तक चलता है । बाद में खाना खाकर थोड़ा आराम करते हैं । बाद में आराम करके हाथ मुँह धोकर मेगेज़ीन पत्र – पत्रिकाएं पढ़ते हैं । कभी दोपहर में सब्जी मंडी जाकर हरी सब्जियाँ खरीद लाते हैं । शाम को अपनी बेटी माधुरी के बच्चों के साथ थोड़ी देर अपना वक्त गुजारते हैं । मकान की छत और बरामदे में लगे हुए पेड़ – पौधों की वे शाम को देख भाल करते हैं । रात को डायरी लिखते हैं । और गायत्री जी कहती हैं कि मेरे लिए भी समय निकालते हैं । कभी किसी को समय दिया हो तो उसके लिए भी समय निकालते हैं ।

गायत्री जी ने लिखना उन्हीं से ही सीखा है । वे कहती हैं कि — " अभी जो कुछ लिख रही हूँ उसमें मुझे मदद भी करते हैं । मैं "अलग-अलग" नामक कहानी लिख रही हूँ ।"§1§ कमलेश्वर जी रात को ग्यारह बजे सो जाते हैं । इस प्रकार उनके दिन कटते हैं ।

§5§ <u>आचार व्यवहार :</u>

कमलेश्वर जी आज के साहित्य कारों में अत्यंत महिमा मंडित हैं । खूब चर्चित और लब्ध प्रतिष्ठा भी । किन्तु उनमें किसी प्रकार का दिखावा नहीं है । वे सहज हैं और सामान्य से सामान्य व्यक्ति के लिए भी सहज प्राप्य भी । नये लेखकों, शोधार्थियों तथा अन्य जिज्ञासुओं को वे अपना भरपूर सहयोग देते हैं । मेहमानों को वे ऐसा अपनत्व प्रदान करते हैं कि वह खुद ही भूल जाता है कि वह मेहमान बन कर आया था । वे किसी को भी यह अहसास नहीं होने देते कि वे उसके लिए अपरिचित हैं । सबसे बड़ी खूबी यह है — "आप सौ फीसदी यह तय करके जायें कि उससे लड़कर लौटेंगे पर आप लड़कर नहीं लौट सकते, क्योंकि घोर विरोधी को वह अपने व्यक्तित्व की सहजता, सौजन्य, बुद्धि और अपनी आँखों के विश्वास से पराजित कर लेता है । वह अहंवादी नहीं है, कुण्ठित नहीं है, उसमें एक सहज अपनापन है ।"§2§ आवश्यकतानुसार वे उन पीड़ित और शोषित वर्ग की यथाशक्ति एवं यथोचित सहायता करते हैं, क्योंकि जिन अभावों में उन्होंने जीवन व्यतीत किया है उसे भूलना उनकी सामर्थ्य के बाहर है । सभी के प्रति सुन्दर व्यवहार का कारण

---

1. गायत्री जी से प्रत्यक्ष बात करने पर
2. कमलेश्वर : मधुकर सिंह – पृ० 90%

अच्छा खासा वेटिंगरूम है । कोई न कोई बैठा ही रहता है और हाण्डी जैसी ऐश - ट्रे में चारमीनार झाड़ते हुए आप उसे प्रवचन पिला रहे होते हैं । कभी - कभी वेटिंगरूम ऐसी धर्मशाला भी बन जाता है, जहाँ खाना - कपड़ा से लेकर हजामत का सामान, जूता और जेब खर्च - सभी कुछ बिना "आब्लीगेशन" मिलता है । गुसलखाना साफ करने वाला जमादार भी बिना किसी दुविधा - संकोच के सिगरेट या ब्लेड खुद निकाल लेना अपना अधिकार मानता है ।"〈1〉 इस प्रकार कमलेश्वर जी खुद तंगी और तकलीफ में रहकर औरों की सुविधा जुटाने में लगे रहते हैं - वे सच्चे अर्थों में मित्र हैं ।

〈7〉 स्पष्ट वादिता :

कमलेश्वर जी सरल एवं निष्कपट व्यक्ति हैं । ग्राम्य वातावरण में वे पले हैं और ग्राम्य वातावरण का उन पर प्रभाव भी है । उनके वचनों और मनोभावों में अन्तर नहीं रहता । वे जो कहते हैं वैसा ही वे करते हैं । वे स्पष्ट वक्ता है, वे किसी की भी चाटुकारी पसन्द नहीं करते । और सच बोलने से कभी डरते नहीं हैं । वे गरीब, शोषित और पीड़ित लोगों की तरफ से खुद बोलते हैं । सफलतम लेखक के रूप में आज जो उनकी ख्याति है, उसके बावजूद वे इमानदारी से महसूस करते हैं कि -- "गर्व करने लायक उसने कुछ नहीं लिखा है । "

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कमलेश्वर जी का बाह्य - दर्शन यद्यपि सामान्य - सा, अनाकर्षक प्रतीत होता है, तथापि उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता ।

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह - पृ० 75

§ ख § अंत : पक्ष

व्यक्तित्व के अन्तः पक्ष के अन्तर्गत व्यक्ति के विशिष्ट स्वभाव, मनोवृत्तियों एवं दुर्बलताओं को समाहित किया जा सकता है । मनुष्य के कुछ विशिष्ट गुण एवं अवगुण उसे समाज की भीड़ से एक पृथक् "व्यक्ति" के रूप में प्रतिस्थापित कर देते हैं। व्यक्ति के स्वभाव को भी इन दोनों तत्वों ने प्रभावित किया है । और इसीलिए उनमें कुछ परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है । कमलेश्वर जी एक ओर जहाँ अत्यन्त संवेदनशील, भाव प्रवण एवं भावुक व्यक्ति रहे हैं, वहीं उनमें बौद्धिकता, तर्कशीलता एवं चिन्तनशीलता भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है । कमलेश्वर जी में भावना और बुद्धि दोनों का अतिरेक विद्यमान था । उनके इन विरोधी गुणों से युक्त व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पारिवारिक संस्कारों एवं अपने जीवन के निजी अनुभवों का विशेष योगदान रहा है ।

कमलेश्वर जी का परिवार संयुक्त प्रणाली का परिवार था, उसमें विभिन्न रुचियों, विश्वासों एवं स्वभाव के व्यक्ति थे । इन लोगों का थोड़ा बहुत प्रभाव कमलेश्वर जी पर अवश्य रहा है और उनमें अपने पारिवारिक व्यक्तियों के कुछ गुण भी आ गए हैं । उनका बाल्यावस्था में घर का वातावरण आस्तिकता एवं धार्मिकता से युक्त था । उनके माता - पिता दोनों दुर्गा के बड़े भक्त थे और पूजा - पाठ, भजन - कीर्तन एवं मान-मनौती में परिवार के लोगों का पर्याप्त विश्वास था -- इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है । किन्तु पूजा - पाठ करने का उनका मन नहीं होता । उनका मानना है कि ईश्वर तो है किन्तु " मुझे ढकोसले बाजी या बाह्याडम्बर में विश्वास नहीं है । 'जो भगवान चढावा, पूजा-पाठ वगैरह माँगते हैं ऐसे भगवान को नहीं मानते । मैं सिर्फ सरस्वती को मानता हूँ जो पूजा - अर्चना कुछ नहीं माँगती सिर्फ हाथ जोड़कर प्रणाम करना यही उनके लिए बहुत है।" दूसरा यह कि कमलेश्वर जी को बाल्यावस्था से अब तक फुरसत ही नहीं मिली कि वे भगवान के पास जायें और पूजा - पाठ करें । और ना ही उन्हें कभी जरूरत पड़ी । वे शुरू से ही संघर्षमय जीवन से गुजरे हैं, वे पुरुषार्थ में ही ज्यादा विश्वास करते हैं ।

अतिशय भावुकता एवं बौद्धिकता का जो समन्वित रूप कमलेश्वर जी में देखने को मिलता है, वह प्रायः अन्यत्र नहीं मिलता । कुछ लोग अत्यधिक भावुक होते हैं तो कुछ अतिशय बुद्धिवादी किन्तु कमलेश्वर जी में ये दोनों बातें अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची हुई है ।

भावना के अतिरेक के कारण उनमें प्रगाढ़ संवेदनशीलता विद्यमान रही है । श्री अरबिंद सुरती जो गुजराती के प्रख्यात व्यंग्यकार हैं, लिखते हैं -- ... कमलेश्वर जीके "टी. वी. सेन्टर पहुँचते - पहुँचते तो उनकी आँखे गीली हो गयीं । और " परिक्रमा " कार्यक्रम शुरू हो, इससे पहले ही आँसू लुढ़क पड़े । तब मुझे पता चला कि उनके एक अजीज़ दोस्त और हिन्दी के नयी पीढ़ी के गज़लकार श्री दुष्यंतकुमार का भोपाल में हार्ट फ़ेल हो गया था ।

हैरानी की बात तो यह थी कि एक मित्र, जो उनसे मीलों दूर था, एक मित्र जिनसे शायद ही वे साल भर में एक बार मिल पाते होंगे ..... फिर भी उसका इतना गम ? लेकिन यह तो मैं पहले ही कह चुका हूँ -- कमलेश्वर एक नाज़ुक दिल भी है । चाहे मित्र उनके करीब हों या दूर, वे उनके हृदय में समाये रहते हैं । मित्र को देखते ही उनका सीना ख़ुशी से फूला नहीं समाता ।"(1) समाज के शोषित, दलित एवं पीड़ित वर्ग के प्रति अगाध करूणा एवं सहानुभूति का भाव रहा है । वे बहुत संकोची था । इस विषय में उनकी माता जी का कहना है कि ---- " कैलाश (यही उसका घर का नाम है) इतना संकोच करता है कि दुबारा रोटी तक नहीं माँगता .... मुझे जिन्दगी में यह अफ़सोस हमेशा रहेगा कि मेरे बेटे ने मुझसे ही कभी रोटी या पैसा नहीं माँगा ।"(2) वे ज़िद्दी स्वभाव के नहीं थे । जो भी मिलता जैसा समय होता उसमें ही वे सन्तोष कर लेते हैं ।

संवेदनशीलता के साथ - साथ कमलेश्वर जी में सहृदयता, सदाशयता एवं प्रासंगिक सत्य है कि उन्होंने अपनी विलक्षण मेधा द्वारा ... अल्पकाल में, इच्छा मात्र से, व्यंग्य विनोद की प्रकृति को आत्मसात कर लिया । दुष्यन्त कुमार जी का कहना है कि -- "उनका मूल सत्य यह है कि उसके असल व्यक्तित्व की अन्तर्धारा में न तो व्यंग्य है और न हास्य । वह स्वभाव से अत्यन्त संवेदनशील, भावप्रवण

---

1. पूर्वोक्त - पृ0 362 - 363
2. पूर्वोक्त - पृ0 88

और गम्भीर व्यक्ति है । उसका मूल भाव करुणा है - सघन - पूँजीभूत करुणा - जिसके कारण वह अपने व्यंग्य में भी अनुदार नहीं हो पाता, यहाँ तक कि उसकी फबती से आपको कहीं ज़रा भी चोट पहुँची तो शायद पहला आदमी वही होगा जो तत्क्षण इस बात को भाँप लेगा और मिलते ही, झिझकते हुए, आपका हाथ अपने हाथ में लेकर इस क़दर प्यार से दबायेगा कि उसकी हथेलियों की ऊष्मा में आप {अगर आप थोड़े भी समझदार हैं तो} असल कमलेश्वर को खोज निकालने में भूल नहीं करेंगें ।"{1}

कमलेश्वर जी सहृदय एवं संवेदनशील "व्यक्ति" होने के साथ - साथ मिल - जुलकर रहने में अधिक विश्वास रखते हैं । उन्हें कभी अकेले रहना अच्छा नहीं लगता। बाल्यावस्था में संयुक्त परिवार में रहने के कारण लोगों के बीच घिरे रहना उन्हें सदैव रुचिकर लगता है । इतना ही नहीं, अपनी इसी सामाजिकता के कारण वह सायंकाल घर के घेरे में बाँधकर नहीं रह पाते थे । इसलिए मित्रों के समूह में घूमना-फिरना या गप्पबाजी करने का उन्हें बेहद अच्छा लगता है । बड़ा ही विनोदी एवं हँसमुख स्वभाव उन्होंने पाया है ।

{1} पूर्वोक्त, पृष्ठ-

§ग§ कमलेश्वर की रचनाधर्मिता के अनेक रूप :

§1§ कमलेश्वर सम्पादक के रूप में

§2§ कमलेश्वर आलोचक के रूप में

§3§ नाट्य रूपांतरिक के रूप में

§4§ टेलिविजन और कमलेश्वर

§5§ फिल्में और कमलेश्वर

§6§ कथाकार रूप में -- §1§ कहानीकार §2§ उपन्यासकार

प्रस्तावना ::

किसी भी रचनाकार की सामर्थ्य और श्रेष्ठता उसकी रचनाओं के आधार पर जानी जाती है । कमलेश्वर ने एक उत्कृष्ट रचनाकार के रूप में अपने लिये जो विशेष स्थान बनाया है वह बहु आयामी है । वे केवल एक उत्तम कहानीकार ही नहीं सम्पादक के रूप में, आलोचक के रूप में, नाट्य रूपांतरिक उपन्यासकार के रूप में, भी अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं । साथ ही उन्होंने फिल्मों के लिए संवाद लिखे हैं, पटकथायें लिखी हैं और दूरदर्शन में स्क्रिप्ट लेखक के रूप में कार्य किया, कार्यक्रम प्रस्तोता रहे, उद्घोषक के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित की, और नए कार्यक्रमों की रूप रेखा बनाई तथा उनकी शुरुआत भी स्वयं की । दूरदर्शन में उसकी छोटी नौकरी से लेकर उसके सर्वोच्च शिखर तक पहुँचे -- वे इसके " अतिरिक्त महानिदेशक " भी हुए । यहाँ हम उनके इन्हीं रूपों की चर्चा करेंगें ।

§1§ कमलेश्वर सम्पादक के रूप में :

समाज में पत्रकार की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है । वह समय - समय पर घटनेवाली घटनाओं की सूचना देकर ही मुक्त नहीं हो पाता, वरन् अपने अर्जित अनुभव, ज्ञान और चिंतन से ऐसे विचार प्रस्तुत करता है जो समय के अनुरूप होते हैं। और घटनाओं को सही - दिशा प्रदान करते हैं । पत्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समझ से सम्पृक्तबुद्धि समाज को रेखांकित करती है । इस प्रक्रिया के दौर में उसके कथ्य और भाषा में ऐसी शक्ति पैदा होती है कि पाठक की मानसिकता को आंदोलित करती है । यह भाषा पाठक को वैचारिक आयाम देती है और उसके

बौद्धिक स्तर को विकसित करती है और समय की पहचान के लिए शिक्षित भी करती है ।

देखा जाय तो पत्रकारिता का उद्भव सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता से ही हुआ है । सामाजिक मुक्ति से लेकर राष्ट्रीय मुक्ति तक उसकी ऐतिहासिक यात्रा रही है । इस यात्रा को आगे बढ़ाने में समय - समय पर समाज सुधारकों, राष्ट्रीय नेताओं, सजग पत्रकारों एवं साहित्यकारों का महत् योगदान रहा है । वैसे तो "सम्पादन" शब्द में ही चिंतन और पत्रकारिता की परिकल्पना व्याप्त है । सम्पादक कैसा होना चाहिए उसके बारे में भी थोड़ी बहुत चर्चा कर लेना आवश्यक है । विशेषकर सम्पादक ऐसा हो जो लेखक भी हो । क्योंकि लेखक - सम्पादक का दायित्व कुछ अधिक हो जाता है । अपनी सृजनात्मक क्षमता के बल पर लेखक - सम्पादक साहित्यिक रचनाधर्मिता को युगबोध से जोड़ने में सक्रिय सहयोग देता है । अजित पुष्कल का कहना है कि -- "मैं छोटे - बड़े ऐसे ही संघर्षरत चेतना - संपन्न सम्पादकों की कगार में एक कड़ी के रूप में कमलेश्वर को परखने का औचित्य अनुभव करता हूँ । क्योंकि व्यवसायिक पत्रिका से जुड़ जाने मात्र से किसी सम्पादक को संदिग्ध भाव से देखना आँख बन्द करके देखना जैसा होगा । "(1)

आज पत्रकारिता व्यापार के रूप में बदल गयी है । व्यावसायिक संस्थानों से रोचक और रंग - बिरंगी सामग्री वाली पत्रिकाएँ बड़ी मात्रा में निकल रही हैं। प्रश्न पत्रिका का नहीं, सम्पादक की जागरूकता का है । हाँ यदि सम्पादक की "कलम" अपनी, और "कलम" मालिक का हो तब तो रेखांकित करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता । और .... यदि सम्पादक सामयिक बोध को आत्मसात् करता चल रहा हो, उसमें वैज्ञानिक विश्लेषण की क्षमता हो, उसको अपनी "कलम" और अपना "कालम" हो, और कालम आम आदमी की पक्षधरता में हो । तब? तब तो कोई कारण समझ में नहीं आता । क्योंकि युगबोध आम आदमी को "अमूर्त" करता चला जा रहा है । आम आदमी को अमूर्त समझने वालों के समक्ष "सारिका" मार्च 74 के सम्पादकीय " मेरा पन्ना " का एक अंश प्रस्तुत है । अजित पुष्कल का कहना है कि "शायद आम आदमी का मूर्त रूप स्पष्ट हो सके "ः-

" आज के साहित्य का सामान्यजन या आम आदमी वह है जो कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में नियंता नहीं है, पर हर कार्यक्षेत्र की आधार-शीला है । वह अमूर्त और

---

1. कमलेश्वर : सम्पादक मधुकर सिंह - अजित पुष्कल की नजर में-पृष्ठ- 330

दार्शनिक अस्तित्वों से त्रस्त इंसान नहीं, बल्कि आदमी और आदमी के बीच भयानक रूप से विकृत और असंतुलित हो गये सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकारों की अति से त्रस्त और शोषित आदमी है । यह वह आदमी है जो अपनी नियति और अस्तित्व का नियंता भी नहीं रह गया है । अल्पजन हैं, जो अपनी मर्जी के मालिक हैं और बहुजन हैं जो अपनी मर्जी के मालिक नहीं हैं — बहुजनों का यह : दलित, शोषित, प्रताड़ित और अपमानित वर्ग ही आज का आम आदमी है, जो इतिहास की लम्बी यात्रा में छला गया है । ....

आज की सारी उत्पादन व्यवस्था और जीवन प्रणाली में सत्ता आक्रांति राजनीति ﴾अतिक्रांतिवादी﴿ और पूँजीवाद द्वारा झूठे आश्वासनों के बहुत उत्पीड़िन, अस्तित्व के लिए नियंत्रित, अधिकारों से वंचित, आर्थिक रूप में शोषित, सामाजिक स्तर पर दलित, अपने टूटे हुए वर्तमान और अँधेरे के गर्त में डूबे भविष्य के लिए असमान ऐतिहासिक लड़ाई में जूझता, थोड़ा सा जीतता, कई बार हारता, पर अनवरत संघर्ष को अन्त तक ले जाने के जो कटिबद्ध है -- वह है अल्पजन के सामने खड़ा सामान्य जन।"﴾1﴿

अजित पुष्कल की समझ में उपरियुक्त पुष्टि के लिये कमलेश्वर के चिंतन पक्ष का मुद्दा भी साफ़ कर लिया जाय ﴾क्योंकि यथार्थ बोध को वैचारिक संरचनात्मकता चिंतन के बलबूते पर ही मिलती है । कमलेश्वर जी कहते हैं कि — "चिंतन, पत्रकारिता और संपादन के संदर्भ में कहानी का आन्दोलन प्रगतिशील साहित्य का ही अभिन्न रूप था । उसकी सारी चिंतना मार्क्सवादी रही है । इस आन्दोलन से संबद्ध लेखकों ने अपने ढंग से यथार्थ की अभिव्यक्ति के आयाम खोजे थे । मैं यहाँ पर "नयी कहानी" के बारे में ज़्यादा न कहकर कहानी के सम्बन्ध में कमलेश्वर की सोच को रेखांकित करना चाहूँगा। यथा —

﴾1﴿ "कहानी लिखना, मेरा व्यवसाय नहीं — विश्वास है । "

﴾2﴿ "मेरा जीवन इतिहास सापेक्ष है । उसके तमाम अंर्तद्वन्दों का साक्षी है -- व्यक्ति और उसकी सामाजिकता दोनों का । "

﴾3﴿ "पिछले दस - पन्द्रह वर्षों में कुछ "गज़टेड आलोचकों" के कारनामों के कारण एकाएक प्रगतिशीलता, जनवादी दृष्टिकोण आदि शब्दों से लेखकों को परहेज हो गया, इतना ही नहीं उन शब्दों से उन्हें डर भी लगने लगा - मेरे लिए ये शब्द डर का कारण नहीं है -- वे मेरी शक्ति हैं ।"

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह - "मेरा पन्ना का एक अंश" पृ0-33

§4§ "पश्चिम की कुंठा, कुत्सा, अकेलापन, पराजय और हताशा मेरे लिए चिंता का विषय हो सकता है, मेरा वर्ण्य नहीं ।"

§5§ "आधुनिकता मेरे लिए वही है जो अपने ऐतिहासिक क्रम और सामाजिक संदर्भों में प्रस्फुटित हुई है ।"

§6§ "जीवन के प्रति प्रतिबद्ध होना मेरी अनिवार्यता है । इस टूटते, हारते और अकुलाते मनुष्य की गरिमा में मेरा विश्वास है ।"

§7§ "जिनकी जीत होती रहेगी, वे क्रूर होते जायेंगे । इसीलिए मुझे तो लगता है कि मैं हमेशा "हारे हुओं" के बीच रहने के लिए प्रतिबद्ध हूँ और जब तक यह होता रहेगा, तब तक सब जीत नहीं जायेंगे ।" §1§

आत्मकथ्य" के ये विचार जन साधारण को सामाजिक प्रताड़ना तथा उत्पीड़न से मुक्त कराने का एहसास है । कमलेश्वर में चिन्तन का यह पक्ष ही प्रमुख है ।

कमलेश्वर जी ने सर्व प्रथम कथाकार के रूप में ख्याति प्राप्त किया है । किन्तु समय - समय पर उन्होंने सम्पादन कार्य भी किया है ।

सर्व प्रथम हिन्दी "संकेत" में उन्होंने सम्पादक के रूप में कार्य किया था । उन्होंने उपेन्द्रनाथ "अश्क" के प्रधान संपादकत्व में निकलने वाले "संकेत" के सहयोगी संपादक के रूप में भी कार्य किया है । दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक "इंगित" का भी सम्पादन किया है । किन्तु कहानी की दृष्टि से उनके संपादन का महत्व दो ही पत्रिकाओं में ज्यादा उजागर होता है । "नई कहानियाँ" और "सारिका" । सन् 1963 से 1965 ई. तक उन्होंने "नई कहानियाँ" का संपादन किया । उस समय कम - से - कम नये लेखकों के लिए किसी व्यावसायिक पत्रिका के तीन-तीन विशेषांक निकाल देना एक बहुत बड़े साहस का काम था । कमलेश्वर जी ने अपने को सफल सम्पादक सिद्ध करने के बाद बाइज्जत "नई कहानियाँ" से अलग हुए हैं । बाद में वे मार्च 1968 में "सारिका" का सम्पादकत्व ग्रहण किया और अप्रैल 1978 ई. तक इसका संपादन करते रहे । यह उनके संपादनकाल का गौरवपूर्ण समय है । कमलेश्वर "सारिका" को विशेष आकर्षक और पठनीय नहीं बना पाए । लेकिन सर्वप्रथम हिन्दी कहानी का जीवंत संवाद अन्य भारतीय भाषाओं की कहानियों के साथ इसी पत्रिका द्वारा संभव हुआ । "सारिका" ने हिन्दी कहानियों के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं की

---

1. मांस का दरिया" कमलेश्वर आत्मकथ्य

कहानियाँ प्रकाशित कर भाषाओं के सेतु - बंधन का कार्य किया । इस दृष्टि से "सारिका" ने हिन्दी कहानीकार को विश्व - कहानी के श्रेष्ठ कृतित्व से भी परिचित कराया ।

इसके अतिरिक्त समय - समय पर कमलेश्वर ने "सारिका" के कुछ अन्य विशिष्ट अंक निकाले जिनमें हिन्दी कहानी की कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियों को रेखांकित किया गया, यथा - "युद्ध और लेखक", "माता - पिता" और "घर - परिवार" आज के लेखन के लेखन के आईने में" आदि ।

"इंगित" साप्ताहिक की जानकारी बहुतों को नहीं है । पर यह ऐसा पत्र था जो समाचारों को विचारों की पीठिका के साथ प्रस्तुत करता था । "सारिका" विशेषांक मोहन राकेश और दुष्यंत कुमार की स्मृति में निकाले वे भी अपने आप में एक संपादकीय उपलब्धि और साहित्य की अमूल्य निधि हैं । "सारिका" के माध्यम से उन्होंने अपना बहुचर्चित कहानी आंदोलन "समांतर" प्रस्थापित किया। एक तरह से कमलेश्वर ने "सारिका" को "समांतर" का मुखपत्र ही बना दिया । "समांतर" के बाद मई 1980 से "गंगा" §मासिक, नई दिल्ली§ का संपादन किया है । इस पत्रिका को उन्होंने एक महत्वपूर्ण पत्रिका के रूप में स्थापित कर दिया है। पत्रिका को जीवंत और रोचक बनाने की ज़िम्मेदारी भी सम्पादक पर होती है।

अजित पुष्कल जी का कहना है कि -- "सम्पादक कमलेश्वर अपनी मेज पर बैठकर फ़तवेबाजी के लिए कलम ही नहीं घिसता वरन् साहित्यिक कार्य के लिए "फ़ील्ड वर्क" भी करता है । पूरी धुन के साथ । "आम आदमी" के लिए कुछ करते रहने की छटपटाहट उसमें कभी भी देखी जा सकती है । इसीलिए मैं कमलेश्वर को सामयिक परिवर्तन का भी चेतना को विकसित करने वाले सम्पादकों की पंक्ति में ही पाता हूँ ।"§1§

---

1. कमलेश्वर : मधुकर सिंह संपादित पुष्कल जी लिखित - पृ0 342

§2§ कमलेश्वर आलोचक के रूप में :

आलोचक का कार्य छायावाद - युग से ही रचनाकार को करना पड़ा है । सुमित्रानंदन पंत के "पल्लव" की भूमिका से चली आती हुई इस परंपरा को "सप्तकों" के कवियों ने प्रस्तुत किया है और फिर नई कहानी को प्रस्थापित करने का कार्य भी राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश एवं कमलेश्वर जैसे कथाकारों को करना पड़ा । कहानी रचना के साथ - साथ कमलेश्वर ने कहानी, नई कहानी की व्याख्या और पक्षधरता में बहुत कुछ लिखा है । उन्होंने नई कहानी के आलोचक रूप में जिम्मेदार भूमिका निभाई । उनके अपने विभिन्न लेखों और "नई कहानी की भूमिका" पुस्तक में उन्होंने नई कहानी के विभिन्न पक्षों को बखूबी पेश किया । पुरानी कहानी की जड़ता के कारण, कहानी में नया क्या है, नई कहानी और प्रामाणिकता का प्रश्न, नई कहानी का अस्तित्व, नई कहानी और आधुनिकता, नई कहानी की अपनी अन्वेषित कुछ दिशाएं, नई कहानी का स्पबंध जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों की "नई कहानी की भूमिका" में विस्तृत चर्चा हुई । नई कहानी को लेकर की गई समस्त आलोचनाओं का प्रत्युत्तर देने का भी सफल प्रयास इस पुस्तक में किया गया। इसके साथ ही इसके प्रकाशन वर्ष §1966 ई. § तक, 15-16 वर्षों में प्रकाशित लगभग समस्त महत्वपूर्ण और चर्चित कहानियों का समुचित मूल्यांकन भी हुआ । इन सब दृष्टियों से "नई कहानी की भूमिका" नई कहानी की पहचान में सहायक एक अच्छी आलोचनात्मक कृति है ।

" समय के कटु यथार्थ और ज्वलंत प्रश्नों से कटकर जब नई कहानी मात्र सेक्स - चित्रण में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ रही थी, जब नई कहानी "अकहानी आंदोलन" के रूप में "जांघो के जंगल" में भटक कर रह गई थी, जब तटस्थता के नाम पर पात्रों की नपुसंकता और मनुष्य विरोधी प्रवृत्ति", "कामकला के बचकाने खेल" ही कहानी के कथ्य रह गए थे तब कमलेश्वर ने "धर्मयुग" में "ऐयाश प्रेतों का विद्रोह", "पात्रों का यह प्रेत संसार," "वैचारिक कफन और ये आज्ञाकारी विद्रोही" तथा "दिमागों में दस्तक देते प्रामाणिक लेखन के कथा-पत्र" नामक अपनी प्रसिद्ध लेखमाला प्रकाशित कर "अच्छे" और "बुरे" कहानी लेखन का बोध देने का प्रयास किया ।"§1§

---

1. कमलेश्वर कहानी का संदर्भ" : पुष्पपाल सिंह पृ0- 20

यह उनकी बहुत विवादास्पद लेखमाला है जिसमें कहीं - कहीं कुछ कहानीकारों के प्रति कमलेश्वर अत्यधिक कटु हो उठे हैं और कुछ लेखकों के प्रति अतिशय उदार किन्तु सैक्स - चित्रण की प्रवृत्ति को कुछ नियंत्रण अवश्य मिला ।

इसी प्रकार "समांतर" आंदोलनों की पक्षधरता में लिखे गए अनेक लेखों, " सारिका " में "मेरा पन्ना" के संपादकीय लेखों आदि में उनके आलोचक व्यक्तित्व का परिचय मिलता है । समांतरकालीन उनके लेखों में आंदोलन का जोश और एक विशिष्ट प्रकार का मसीहाई अंदाज पाया जाता है । इसीलिए परेश जैसे कहानीकारों ने उन्हें व्यंग्यात्मक रूप में " आचार्य रजनीश " कहा है ।"§1§
उनकी आलोचना से मतवैभिन्य होते हुए भी यह स्वीकार करना होगा कि उन्होंने कहानी के एक समर्थ आलोचक की भूमिका निभाई है ।

---

1. "खोयी हुई दिशाएं, नयी कहानी की बात" पृ0-8

§3§ नाट्य रूपांतरिक के रूप में :

कमलेश्वर जी ने अनेक रूपों में काम किया है । कहानीकार के रूप में, उपन्यासकार के रूप में, सम्पादक के रूप में, फिल्म में पटकथा और संवाद के रूप में, दूरदर्शन के स्क्रिप्टराइटर के रूप में तथा अन्य रूपों में काम किया है । कमलेश्वर जी का एक ही मकसद था कि जो पीड़ित वर्ग है और जो शोषित वर्ग है उनकी तरफ से बोलने वाला कोई हो ? उन्होंने कहानी, उपन्यास माध्यम से उन पीड़ित वर्ग का चित्रण किया साथ ही उन्होंने नाट्य रूपांतरिक के रूप में भी उसी प्रकार की कहानी चुनी जो पीड़ित और शोषित वर्ग का दायित्व निभा रहा हो ।

" दर्पण " दूरदर्शन में धारावाहिक के प्रस्तुत हो चुका है । उसमें तेरह भारतीय भाषाओं की कहानिओं का प्रस्तुतीकरण हुआ था किन्तु पुस्तक में मात्र आठ आलेख दिए गए हैं । ताकि संकलन का कलेवर बहुत भारी न हो --

कमलेश्वर जी ने भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियों का नाट्य रूपांतर बहुत ही सहज और सरल भाषा में किया है । जब वे दूरदर्शन में एडीशनल डायरेक्टर जनरल के रूप में §1980-82§ आये वह समय उनके लिए महत्वपूर्ण समय था । क्योंकि उस समय दूरदर्शन ने श्याम - श्वेत के युग को छोड़कर "कलर" के युग में प्रवेश किया । उस समय दूरदर्शन के प्रायोजित कार्यक्रमों की बाढ़ उनके सामने थी । यह दूरदर्शन के अपने भव्य विकास का पहला सार्थक कदम है । सिर्फ कदम ही नहीं - एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व को वहन करने की शुरूआत भी है । दूरदर्शन के साथ अपने दूसरे कार्यकाल §1980-82§ में उन्हें भारतीय दूरदर्शन को दिशा देने का कठिन दायित्व सौंपा गया । कमलेश्वर जी ने कहा है कि -- "मुझे यह कठिन दायित्व स्वीकार करते गर्व होता है कि सरकारी नौकरी में रहते हुए भी मेरे तमाम सहकर्मियों और सहयोगियों ने दूरदर्शन को आम आदमी के लिए सार्थक और रचनात्मक बनाने में मेरा पूरा - पूरा साथ दिया, और यहीं से दूरदर्शन का सार्थक संबंध भारतीय साहित्य और रंगमंच से जोड़ने की जरूरी भूमि का सूत्रपात हुआ।"§1§ इस "दर्पण" को जितनी बार समाज के समक्ष लायें उतनी ही बार वह नया रूप ले लाता है ।

---

1. कमलेश्वर - "दर्पण" §भूमिका§

इस "दर्पण" नाट्य रूपांतर में भारतीय भाषाओं की आठ कहानियों के आलेख दिए हैं उसमें हमें अपनी ही छबि देखने को मिलती है । कहा जाता है कि " दर्पण " अगर टूट जाये तो उसमें छबि नहीं देख सकते । किन्तु कमलेश्वर जी का " दर्पण " कभी टूटता भी नहीं और ना ही धुंधला होता है । इस "दर्पण" में जितनी बार देखें उतनी ही बार वह नया रूप लाता है ।

" दर्पण " नाट्य रूपांतर में मध्यम वर्ग के पीड़ित और शोषितवर्गों की कहानी है । उन्होंने भारत की सिंधी, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, पंजाबी, मलयालम, बंगला और हिन्दी भाषाओं का नाट्य रूपांतर किया है । इन आठों कहानियों की संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है -- जो दर्पण धारावाहिक से हमें परिचित करायेगी ---

§1§ सिंधी कहानी "गलत गणित" लेखक-ईश्वर चंदर :

इस कहानी में मध्यम वर्ग की कहानी है । श्याम एक क्लर्क है और वह अपने बेटे को डाक्टरी करवाना चाहता है । श्याम के पिताजी ने श्याम को बहुत समझाया कि चादर जितनी लम्बी हो उतने ही पैर लम्बे करने चाहिए । किन्तु श्याम माने नहीं और कर्जे पर कर्जा लेकर वह अपने बेटे सीरू को मेडिकल ज्वाइन करवा देते हैं । सीरू पास भी हो जाता है । और अपने साथ की एक लड़की रश्मि के साथ अमेरीका जाने को तैयार हो जाता है । यह सब इतनी जल्दी तय हुआ होता है कि श्याम अपने बेटे से परिस्थिति का जिक्र भी नहीं कर पाते किन्तु टैक्सी में बैठकर जब श्याम हिम्मत करके कहते हैं कि -- "लेकिन सीरू ..... उन .... तुम्हे डाक्टरी पढ़ाने में जो ये हजारों का कर्जा हो गया है, वो क्या मैं अकेला उतार पाऊँगा ? सीरू ने कहा कर्जे का क्या है पापा .... मैंने डाक्टरी की पढ़ाई शुरू की, तब भी कर्जे तो आपके ऊपर पहले से थे -- "§1§ सीरू प्लेन में बैठकर चला जाता है और श्याम टूटकर वापस जाता हुआ दिखाई देता है ।

श्याम को था कि सीरू डाक्टरी कर लेगा तो मेरे सब दुःख दूर हो जायेंगे और कर्जा भी निपट जायेगा किन्तु श्याम का गणित गलत सिद्ध होता है और वह कर्जे में दब जाता है ।

---

1. कमलेश्वर " दर्पण " पृष्ठ - 30 - 31

§2§ उर्दू कहानी - "दीमक" - ग़यास अहमद गद्दी :

इस कहानी में हनीफ और सईदा दोनों पति - पत्नी है और उनकी एक बेटी है जिसका नाम है हमीदा । हनीफ मेहनत करता है किन्तु पगार के दिन दोस्तों के साथ सिनेमा देखने चला जाना और पैसा खर्च करना यह उसकी आदत है । सईदा बहुत परेशान रहती है । हमीदा धीरे - धीरे जवान होती जा रही है । उसके शरीर पर ढकने के लिए दुपट्टा नहीं ला पाते और मुहल्ले वाले हमीदा का मजाक उड़ाते हैं । सईदा किसी कपड़े में से टुकड़ा फांड़कर देती है कि वह दुपट्टा बना ले । एक दिन सईदा के हाथ से पड़ोस वाले की सोने की अंगुठी गुम हो जाती है । तब हनीफ और सईदा मनोमन एक दूसरे पर इल्जाम लगाते हैं । किन्तु बाद में अँगूठी मिल जाती है । और दोनों एक दूसरे के सामने प्यार भरी नजर से देखते हैं । और आखिर में सईदा कहती है कि -- "बोनस मिलने पर मेरी बालियाँ बनवा दोगे ? सईदा बहुत उम्मीद और प्यार से हनीफ की आँखों में देखती है -- "§1§

§3§ कन्नड़ कहानी - "दहीवाली" - मास्ति वेंकटेश अयंगार

इस कहानी में एक मनगम्मा है जो दहीवाली है । मनगम्मा रोज दही बेचने जाती है । मनगम्मा का पति उसे छोड़कर दूसरी औरत के पास चला जाता है । इसलिए वह अपनी मन की बात एक अन्य स्त्री "अम्मैया" को ही बताती है । मनगम्मा का एक बेटा होता है वह भी बड़ा होने पर अलग हो जाता है । और अपने बेटे को दादी "मनगम्मा" से नहीं मिलने देता । मनगम्मा और दुःखी हो जाती है । अन्य पुरुष रंगप्पा, मनगम्मा को अकेली देखकर उसे अपना बनाने की कोशिश करता है किन्तु मनगम्मा तैयार नहीं होती । रंगप्पा की बात जब मनगम्मा के बेटे को मालूम होती है तब "बहू और बेटे" दोनों बैठके सोचते हैं कि मनगम्मा ने शादी कर ली तो हमें पैसा नहीं मिलेगा । इस लिए वो लोग मनगम्मा के साथ बोलने लगते हैं और दही बेचने मनगम्मा नहीं उसकी बहू जाती है । यह सब देखकर मनगम्मा को आश्चर्य होता है । इस प्रकार मनगम्मा की बहू अपने बेटे के बहाने अपनी सास की रंगप्पा से रक्षा करती है और मनगम्मा, रंगप्पा के चंगुल से बच जाती है ।

---

1. कमलेश्वर - "दर्पण" पृष्ठ - 54

§4§ पंजाबी कहानी - "भैंस के सींघों पर टिकी धरती" : कुलवंत सिंह विर्क

इस में आर्मी के दो दोस्त मानसिंह और करमसिंह की कहानी हैं । लड़ाई के समय मानसिंह को अपनी बहन की शादी होने के कारण दो महीने की छुट्टी मिल जाती हैं । इसलिए वह घर जा रहा है । इस समय करमसिंह आकर मानसिंह से कहता है कि लौटते समय मेरे गाँव भी जा कर आना । तब मानसिंह कहता है अच्छा मैं जाकर आऊँगा । मानसिंह लौटते समय करमसिंह के गाँव जाता है । करमसिंह ने जैसा समझाया था बिलकुल वैसा ही उसका गाँव, उसके माता - पिता, भाई सब उसे मिलते हैं किन्तु करमसिंह का छोटा मुन्ना मानसिंह के पास जाकर कहता है कि मेरे पिताजी कब आयेंगे ? मानसिंह को पता ही नहीं था की करमसिंह की मृत्यु हो गई है । मानसिंह जाने को तैयार होता है और डाकिया सरकारी लिफाफा लेकर आता है । मानसिंह देखकर डाकिया से पूछता है कि यह कागज किस का है ? तब पोस्टमैन ने कहा -- "यही फौज की पैंशन का कायदा - कानून - ड्यूटी पर आदमी मारा जाता है तो शायद ज़्यादा पैंशन मिलती है ... न! "§1§ मानसिंह यह सब कुछ समझ नहीं पाया । फिर से पोस्टमैन ने कहा -- "ओ हो ... लगता है आपको नहीं मालूम .... पिछले महीने ही तो मनहूस खबर लाया था मैं .... इन्हीं हाथों से -- कि करमसिंह लड़ाई में मारा गया ...." §2§ मानसिंह बहुत रोया और मुन्ना भी रोता हुआ कहता है कि -- "तुमने बताया नहीं ... मेले पापा का घर कहाँ है ?" §3§

§5§ मलयालम कहानी "आँखे" -- के. टी. मुहम्मद :

इस कहानी में हीरो और लीला है । हीरो बदसूरत है उसे शादी की बहुत चाह है किन्तु कोई उससे शादी नहीं करता । मुहल्ले में सब लोग उसकी मजाक उड़ाते हैं । किन्तु एक दिन एक अंधी लड़की जिसका नाम लीला है । उसे बुलाकर हीरो खाना खिलाता है और ऊपर से एक रुपया भी देता है । तब वह लड़की कहती है --- "§रुपया लेकर§ .... तब क्या रुकना पड़ेगा ?" हीरो कुछ समझा नहीं । हीरो और लीला दोनों शादी कर लेते हैं और उन्हें एक बच्चा भी होता है ।

---

1. "दर्पण" कमलेश्वर - पृ0-113
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 114
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 116

एक दिन बच्चा बहुत रोता है तो लीला कपड़ा सुखाते हुए लेने जाती है तो उसे पत्थर की ठोकर लगती है और वह गिर जाती है उसे खून बहने लगता है । हीरो उसे दवाखाने ले जाता है । डॉक्टरने कहा लीला की आंख ठीक हो सकती है । उसमें पैसा चाहिए । हीरो सोचने लगा कि लीला को दिखाई देगा तो वो मुझे पसंद नहीं करेगी । ऐसी घटना होने पर लीला की आंखों पर डाक्टरनी पट्टी बान्ध देती है । हीरो रोता है लीला भी रोती है । लीला कहती है अब मैं नहीं बचूंगी । हीरो को बहुत अफसोस होता है कि मैंने लीला की आंख का ऑपरेशन करवा दिया होता तो आज यह दिन नहीं देखने को मिलता । और वह रोता हुआ बाहर निकल जाता है ।

§6§ बंगला कहानी - "महानगर" -- प्रेमेंद्रमित्र

इस कहानी में लछमन और मुकुंदा दोनों भाई मछली का धंधा करते हैं । दोनों नाव लेकर महानगर की ओर जाते हैं उसमें लछमन का बेटा "रतन" छुपकर बैठ जाता है । उसे महानगर देखने की बहुत इच्छा थी । वहां पहुंचते ही रतन महानगर को जाती सड़क को देखते हुए भागता जा रहा है । रतन उल्टाडींगी की ओर जाता है । वहां उसकी बहन रहती है । उसे कोई उठा ले गया था तब से उसके पिताजी बुलाते नहीं । चपला अपने भाई को देखकर बहुत खुश होती है किन्तु चपला उसे ज्यादा देर रख भी नहीं सकती क्योंकि वह वेश्या होती है । वह रतन को लड्डू खाने को देती है । रतन खुश होकर खा लेता है । चलते समय वह चपला को भी साथ में चलने को कहता है । चपला तैयार नहीं होती । चपला कहती है -- "नहीं रतन भइया -- मैं नहीं चल सकूँगी -- कहते हुए चपला खिड़की से झांकती है - गली में कुछेक ग्राहक घूम रहे हैं -- तब तक रतन शर्बत पीकर उसके पास आ जाता है।" §1§ रतन के जाते समय चपला अपने सस्ते पर्स से पांच का एक नोट निकालकर देती है । और रोते हुए उसे कहती है बस से चले जाना । रतन दीदी से गुस्सा होकर सीधे चला जा रहा है । रतन कहता है मैं छोटा हूँ इसलिए मेरे साथ नहीं आती । चपला रोते हुए हां या ना कुछ नहीं कह सकती । रतन मेन रोड की तरफ मुड़ जाता है । और चपला मुँह दबाकर रो पड़ती है ।

51

§7§ हिन्दी कहानी "दिल्ली में एक मौत" -- कमलेश्वर

इस कहानी के मुख्य पात्र दीवानचंद जब तक जीते रहे सबकी मदद करते रहे किन्तु मृत्यु हो जाने पर उनके घर कोई नहीं आता । शव यात्रा में भी लोग अपने - अपने प्रयोजन और बहाने से ही शामिल हुए । किसी को सीधे अपनी ड्यूटी पर जाना है किसी को कहीं और किसी को काम से । मिसेज वासवानी तो उनके शव के पास सज-धज कर लिपिस्टिक लगाकर आती है जैसे गम का अवसर न हो की खुशी का मौका हो । दुनियां बड़ी स्वार्थी है -- स्मशान यात्रा के बाद केवल घर के लोग ही वहां रह जाते हैं -- शेष सब दीवान चंद को भूल चुके हैं ।

कमलेश्वर जी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बंगला कहानी "नष्टनीड़" का हिन्दी नाट्य रूपान्तर "चारुलता" नाम से किया है । यह नाटक सर्व प्रथम 1961 में सप्रूहाउस, नई दिल्ली में "नष्टनीड़" शीर्षक से अत्यंत सफलता पूर्वक मंचित हुआ था । इसके निर्देशक थे आज के जाने - माने फिल्मकार श्री शिवेन्द्र सिन्हा, जिन्हें बाद में कमलेश्वर जी की कहानी पर " फिर भी " के निर्देशन का भी गौरव प्राप्त हुआ । अब तक यह नाटक दिल्ली तथा विभिन्न स्थानों पर कितनी ही बार मंचित हो चुका है ।

कथ्य की दृष्टि से तो यह आज का नाटक है ही -- साथ ही मंच की अपेक्षाओं के अनुसार भी यह एक सहज नाटक है । यह नाटक करीब सत्ताईस बार मंचित हो चुका है । इस नाटक के पुरुष पात्र - अमल, भूपति, उमापति, बिरजू, विनोद और स्त्री पात्र चारु और मंदा हैं।

चारु इस कहानी की नायिका है जो अपने देवर अमल से बहुत धुल - मिल जाती है । और हमेशा उसके साथ समय गुजारा करती है । दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह पाते । चारु के पति भूपति अखबार छापने का काम करते हैं, उसमें उनके दूसरे नंबर के भाई उमापति भागीदार होते हैं । उमापति बहुत चालाक है । वह कर्जा कर के अपनी पत्नी को लेकर गाँव चला जाता है । चारुलता और भूपति दोनों अकेले रह जाते हैं । चारु का मन नहीं लगता उसे पढ़ने का बहुत शौख था वह भी नहीं रहा चारु अमल को याद करती है और उसके पत्र का इंतजार करती है । भूपति कुछ पढ़ने और लिखने की बात करता है, किन्तु चारु का मन नहीं लगा । भूपति चारु को खुश रखने के लिए बहुत कोशिश करते हैं । वे सोचने लगते हैं कि --

" इतने ही खामोश हो गयी है यह जिन्दगी .... {उठकर खड़ा हो जाता है। } चारु । घर नन्हीं - नन्हीं खुशियों और छोटी - छोटी बातों के सहारे चलता है। मैंने जाना ही नहीं कि वह बातें क्या है और उन खुशियों के दिन मेरे हाथ से अनजाने ही निकल गये ... चारु, तुमने अपनी कामनाओं का एक नीड़ बना लिया.... लेकिन मेरा तो कोई नीड़ नहीं रह गया .... तुम तो कहीं शांति पा सकती हो - जा भी सकती हो, लेकिन मैं कहाँ भागकर चला जाऊँ ? {कहता हुआ दरवाजे के पास तक चला जाता है । एक क्षण वहाँ रुकता है और फिर जैसे सोचकर मुड़ता है और प्यार से चारु के कँधे पर हाथ रख लेता है।} अच्छा चारु । चलो, मेरे साथ ही चलो ।"{।}

इस प्रकार चारु बगीचे में खड़ी होकर पत्ते तोड़ती रहती है और रोती है । भूपति को बाद में ही पता चलता है कि स्त्री को पति की क्या जरूरत है सिर्फ पैसा ही जरुरी नहीं उसके साथ उसकी इच्छाओं को पूर्तिभी सब कुछ देखना पड़ता है । तभी संसार चल सकता है ।

---

1. चारुलता - कमलेश्वर - पृ0 - 88

§4§ टेलिविजन और कमलेश्वर :

कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व के कई पहलू हमें देखने को मिलते हैं । इस "अष्ट-पद" इनसान की सबसे नयी और अनोखी विशेषता यह है कि वह टेलिविजन स्टार भी हैं, जिससे वे जनता के करीब आते हैं । फिल्म स्टार तो हमने देखे हैं । पर हमारे देश में टेलिविजन स्टार होना नयी चीज है ।

कमलेश्वर जी सबसे पहले "परिक्रमा" प्रोग्राम से ज्यादा प्रख्यात हुए हैं । "परिक्रमा" प्रोग्राम के बारे में कई लोगों के मंतव्य हैं उसमें से हम एक प्रसिद्ध सिने - अभिनेता आई. एस. जौहर के मंतव्य के बारे में देखें । उन्होंने लिखा है -- "जो लोग चार हजार रूपये खर्च करके टी. वी. खरीदते हैं, वे हज्जामों और कुलियों के कार्यक्रम नहीं देखना चाहते । कमलेश्वर के प्रोग्राम बकवास है ।"§1§ इस प्रश्न का उत्तर कमलेश्वर जी ने टी. वी. पर ही दिया -- " जो लोग अपनी आँखों पर चार हजार का चश्मा लगाये बैठे हैं, उन्हें जो दिखायी नहीं देता, वही मैं अपने कार्यक्रमों में पेश करता हूँ ।"§2§

" परिक्रमा " प्रोग्राम में उन्होंने पढ़े-लिखे लोगों को दिखाया, उनकी सामाजिक समस्याओं पर उन्हेंने बोलने का मौका दिया और उनसे वाद - विवाद किया। यह प्रोग्राम टेलिविजन की सामाजिक व सोशलिष्ट परिकल्पना थी जो हमें देखने को मिला है । ख्वाजा अहमद अब्बास का कहना है कि -- "टेलिविजन स्टार कमलेश्वर की एक और विशेषता है । वह एक खूबसूरत §पर फिल्मी हीरो जैसा नहीं§ नौजवान §मैं तो नौजवान ही कहूँगा§ आदमी है जो मामूली बुशशर्ट और पैंट में दिखायी देता है -- लगता है किसी दफ्तर से कोई बाबू उठकर चला आया है।"§3§ कमलेश्वर जी एक सामाजिक सोशिलस्ट विचार वाले लेखक हैं । जिनका आर्ट दूरदर्शन के माध्यम से बारह लाख टी. वी. दर्शकों तक हर हफ्ते पहुँचता है । "बम्बई की पत्रिका "डेबोनियर" ने उन्हें सन् 75 के सर्वश्रेष्ठ टी. वी. व्यक्तित्व के रूप में चुना भी है । "§4§

जितेन्द्र भाटिया का कहना है कि कमलेश्वर के वक्ता की एक बड़ी विशेषता यह है कि वह कुछ ही क्षणों में अपने श्रोता के साथ तादात्म्य का कोई - न - कोई सीधा सूत्र ढूँढ निकालते हैं और बहुत जल्दी ही अपनी बातों को उस सूत्र के अनुरूप ढाल लेते हैं ।

---

1. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - पृ0- 306
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 306
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 309
4. पूर्वोक्त - पृ0 - 313

अब तक कमलेश्वर ने अपने साप्ताहिक कार्यक्रमों में मजदूर, कामगार, लेखक, गायक, खोंचेवाले, कुली, ठेले वाले, नाई, मोची इत्यादि लोगों को लाकर दुनिया के सामने पेश किया है ।

कमलेश्वर जी दूरदर्शन में प्रोग्राम से पहले - "टी.वी. के मेकअप रूम में जब वे दर्पण के सामने खड़े होकर अपने घने और मुलायम बालों पर हाथ फिराते हैं तो आप उन्हें अजीब - अजीब चेहरा बनाते हुए देख सकते हैं ।.... और यही कमलेश्वर की खूबी है कि वे टी.वी. पर "प्रोग्राम" नहीं, "जिन्दगी" पेश करते हैं ।"(1)
कमलेश्वर जी की नजर एक ही वर्ग पर केन्द्रित हो, ऐसा नहीं है । उन्होंने कला की दुनियाँ, संगीत - जगत, काव्य - प्रतिभा, धर्म और राजनीति सभी को देखा - परखा है और समय - समय पर एक - से - एक खूबसूरत कार्यक्रम दिये हैं ।

कमलेश्वर जी ने दूरदर्शन के लिए लगभग ढाई सौ स्क्रिप्ट्स का लेखन कार्य किया है । उन्होंने दूरदर्शन से समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण भी किया है "पत्रिका" कार्यक्रम की शुरूआत भी उन्होंने की है । कमलेश्वर जी ने दूरदर्शन पर रनिंग कामेन्ट्री का प्रस्तुतीकरण भी किया है । और भारतीय दूरदर्शन के लिए पहली फिल्म " पन्द्रह अगस्त " का निर्माण भी किया है ।

कमलेश्वर जी दूरदर्शन जैसे सशक्त माध्यम को भारतीय साहित्य और भारतीय रंगमंच से जोड़ना चाहते थे । उनकी यह कोशिश 1959 में जब वे प्रथम स्क्रिप्ट राइटर थे तब से चल रही थी । उनकी यही कोशिश जारी रही जब वे बीस वर्ष बाद 1980-82 में एडीशनल डायरेक्टर जनरल बनकर दूरदर्शन में दुबारा पहुँचे । इस स्थिति में उन्होने जो कार्य किये वे सर्वविदित है । उनका यह अवसर बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि इसी दौर में भारतीय दूरदर्शन ने "श्याम - श्वेत" युग को छोड़कर "कलर" के युग में प्रवेश किया था ।

दूरदर्शन के साथ अपने दूसरे कार्यकाल (1980-82) में कमलेश्वर जी को भारतीय दूरदर्शन को एक नई दिशा देने का दायित्व सौंपा गया । उन्हें यह दायित्व स्वीकार करते हुए गर्व होता है कि सरकारी नौकरी में रहते हुए भी उनके तमाम सहकर्मियों ने पूरा साथ दिया । उन पर कोई अंकुश नहीं लगाया गया ।

---

1. ~~कमलेश्वर~~ मधुकर सिंह - ज्योतिपुनवानी पृष्ठ - 322 (टी.वी. से साभार : मार्च 15 सन्- 75, अंग्रेजी से अनुवाद ।

इसी लम्बे अभियान का नतीजा "दर्पण" सीरियल है । कमलेश्वर जी कहते हैं कि " मैं दूरदर्शन कार्यकाल और "परिक्रमा", "लोकमंच", तथा "दूरदर्शन क्लब" जैसे कार्यक्रमों को पूरी आजादी के साथ आम आदमी के लिए पेश कर सकने के लिए बहुतों का आभारी हूँ ।"(1)

दर्पण" सीरियल के जरिए उन्होंने तेरह कहानियाँ प्रस्तुत की हैं और उसकी सफलता 95 प्रतिशत आंकी गई है ।

(5) फिल्म और कमलेश्वर :

कमलेश्वर ने प्रत्येक रूप में ख्याति प्राप्त की है । उन्होंने फिल्म माध्यम के द्वारा लोगों में जन चेतना जगाने का बहुत अच्छा प्रयास किया है । आज "फिल्म" अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । फिल्म एक व्यावसायिक कला (कमर्शियल आर्ट) है । लेकिन दुर्भाग्यवश भारत में हिन्दी फिल्म उद्योग केवल व्यवसाय ही नहीं बल्कि व्यवसाय का अतिव्यावसायिक रूप -- सट्टा ही रहा है ।

हिन्दी फिल्मों से संबद्ध कुछ सशक्त साहित्यकारों में आज सबसे प्रमुख नाम कमलेश्वर जी का है । कमलेश्वर की कहानियों ने फिल्म रूप में फिल्म व्यवसाय को कथ्य का महत्व दिया है । कमलेश्वर जी ने साहित्यकार को फिल्म उद्योग में एक सर्वथा नया मूल्य और नयी प्रतिष्ठा दी है । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कमलेश्वर जी ने फिल्मों को एक नया वैचारिक धरातल देने का सफल प्रयास किया है ।

" आज हिन्दी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य नाम और एक निश्चित शक्ति है ।" (2)

गिरीश रंजन ने कहा है कि कमलेश्वर यह नाम सिनेमा के परदे पर बहुत तेजी से उभरा है । परिवर्तन की कामना करने वाला व्यक्ति सिर्फ एक क्षेत्र में ही परिवर्तन नहीं चाहता वह हर क्षेत्र में और जीवन के विभिन्न अंगों को अपनी गहन अनुभूतियों से देखता रहता है । वह जिन्दगी की लड़ाई को तब तक देखता रहता जब तक उसे संतोष नहीं होता । कमलेश्वर जी ने रेडियो - टेलिविजन की नौकरी से लेकर फिल्मों में कथा - पटकथा और संवाद लिखने तक की लम्बी दौड़ लगायी है ।

---

1. "दर्पण" कमलेश्वर भूमिका
2. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - पृ0-344 (एक फिल्म समीक्षक के "हिन्दी फिल्मों में कथ्य की तलाश" - एक प्रकाशित लेख का अंश)

अभिव्यक्ति का इतना बड़ा माध्यम कमलेश्वर जी से अछूता कैसे रह जाता । यह उनके लिए एक चैलेंज था जिसे उन्होंने स्वीकार किया ।

गिरीश रंजन का मंतव्य है कि -- "हिन्दी फिल्मों के इतिहास को अगर हम थोड़ा पीछे जाकर देखें तो पता चलेगा कि फिल्मों में कमलेश्वर का आना अनायास नहीं हुआ है । जिस विधा का जन्म कभी मात्र मनोरंजन के लिए हुआ था वह अभि-व्यक्ति का इतना बड़ा माध्यम बन जायेगा, इसकी कल्पना कभी किसी ने शायद नहीं की होगी । एक ओर जहाँ विदेशों में फिल्म को कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम माना गया, वहाँ भारत में खासकर हिन्दी फिल्मों में, उसे मात्र सस्ते मनोरंजन का ही एकमात्र साधन बना कर रख दिया गया । ऐसा रूप धारण करने के पीछे बहुत सारे सामाजिक और राजनैतिक कारण भी हैं ... । पर साथ - ही - साथ इस देश का बौद्धिक वर्ग फिल्मों की ऐसी अवस्था को देखकर सिर्फ अपनी बेबसी का इज़हार कर सकता था और कुछ नहीं, लेकिन यह बेबसी और कुछ कर डालने की अकुलाहट बहुत दिनों तक छिपी नहीं रह सकी । इसका विस्फोट हुआ और उसका प्रारम्भ कमलेश्वर की कहानियों और मार्ग - निर्देश से ही हुआ । "(1) कमलेश्वर जी की लिखी हुई कहानियों पर बनी फिल्म को क्या कहा जाय, किस नाम से सम्बोधित किया जाय ? यह सवाल उठ रहा था । क्योंकि उनकी यह अलग फिल्में थी, जिनमें जीवन का सच्चा रूप देखने को मिलता है । वह चाहे "बदनाम बस्ती" हो या फिर भी", या "डाक बंगला" उनमें जीवन का एक अलग रूप था जिसे सिनेमा के परम्परावादी दृश्यों या कथानकों से अलग माना गया । जिसे आज हम "न्यूवेव" या "समांतर सिनेमा" कहते हैं । इस आन्दोलन में वही कथाकार शामिल हुए जिन्होंने कमलेश्वर जी के साथ मिलकर "नयी कहानियों" को जन्म दिया था । "मोहन राकेश", "राजेन्द्र यादव", "मन्नू भण्डारी" इत्यादि लेखक - लेखिकाओं की रचनाओं को नयी दृष्टि से पढ़ा और परखा जाने लगा । कुछ कमलेश्वर जी की रचनाओं पर फिल्म बनाने को आतुर थे और कई लोगों को कमलेश्वर जी से पटकथा, संवाद आदि लिखवाने की आवश्यकता थी ।

राजेन्द्र यादव के "सारा आकाश" की फिल्म में पटकथा और संवाद कमलेश्वरजी ने लिखे हैं और फिल्म के "टाइटल" में कमलेश्वर जी का नाम तक न था । इसे उन्होंने सिर्फ इस लिए सहा कि " समांतर फिल्म " का आन्दोलन आपसी मन - मुटाव और

---

1. " कमलेश्वर " मधुकर सिंह - गिरीश रंजन -पृष्ठ - 345 - 346

झगड़ों में समाप्त न हो जाये । ऐसी और भी कितनी ही फिल्में है जिनके संवाद से लेकर फिल्म की पूरी योजना तक में कमलेश्वर ने बिना किसी भी तरह की उम्मीद के सहयोग और परामर्श दिये । किन्तु यह दृष्टिकोण व्यावसायिक फ़िल्मों के सामने टिक न सका । ये "समांतर" फिल्में भले न टिकी हों, किन्तु व्यावसायिक फिल्म निर्माता - निर्देशकों ने कमलेश्वरजी की लेखनी को जरूर तलवार की धार माना है । उन्होंने यह महसूस जरूर किया कि "कमलेश्वर ही एक ऐसा व्यक्ति है, एक ऐसा लेखक है, जो फिल्मों की भाषा समझकर कुछ नयी दिशा देने की क्षमता रखता है। "{1}
कल तक जो हिन्दी के लेखकों को मात्र "मुंशी" का दरजा दिया करते थे वे सब के सब सम्मान के साथ कमलेश्वर जी के पास दौड़ आये । गुलजार ने "काली आँधी" और "आगामी अतीत" उपन्यासों पर क्रमशः "आँधी" और "मौसम" फिल्म बना डाली । "आँधी" इतनी विवादास्पद फिल्म बनी कि रिलीज़ होने के बाद इस पर कुछ महीनों के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया गया । राजनैतिक व्यंग्य के साथ ही यह फिल्म जीवन के मानवीय मूल्यों का एक खुला दस्तावेज थी । उसके बाद "मौसम" फिल्म आयी । "मौसम" की संवेदना आम आदमी की संवेदना थी । पूरा फिल्म जगत "कमलेश्वर" के नये नाम से जैसे चौंक-सा उठा । कमलेश्वरजी ने दूसरों की कहानियों पर पटकथा और संवाद लिखने का भार ले लिया । "अमानुष" एक ऐसी फिल्म थी जिसके सिर्फ संवाद कमलेश्वर जी ने लिखे । यह पहली फिल्म है जिसके संवाद हिन्दी से बंगला में अनुदित हुए । यह हिन्दी की सहज और सरल अभिव्यक्ति कमलेश्वर जी के पास ही थी । कमलेश्वर जी के दोस्तों और आलोचकों को कहते गिरीश रंजन ने सुना है कि "कमलेश्वर अब साहित्यकार नहीं, फिल्मी लेखक हो गये हैं ।"

कमलेश्वर जी के पास बहुत सारी फिल्में रहीं । वे किसी के कथाकार थे, किसी के पटकथा लेखक तो किसी के संवाद लिखने में व्यस्त । बी. आर. चोपड़ा शक्ति सामंत, रामानन्द सागर, विजय आनन्द, सुनील दत्त, हेमामालिनी, दुलाल गुहा इत्यादि चोटी के निर्माता, निर्देशकों की सभी फिल्में कमलेश्वर जी के पास रही ।" कल की आने वाली फिल्में निश्चय ही बतायेंगी कि हिन्दी फिल्मों को कमलेश्वर की क्या देन है, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सही फिल्मों की शोध में कमलेश्वर जी लीन हैं । उन्होंने हिन्दी के कथाकार के नाते हिन्दी को

---

1. " कमलेश्वर " मधुकर सिंह, गिरीश रंजन - पृ0 - 346

ही नहीं, हिन्दी फ़िल्मों को भी एक मर्यादा दी है जो सिर्फ़ कमलेश्वर के व्यक्तित्व से ही सम्भव हो पायी है ।"॥1॥

अनाम जी का कहना है कि "मैं कमलेश्वर जी की साहित्यिक हैसियत के बारे में खुद नहीं जानता पर जो कुछ औरों ने बताया है उस पर यक़ीन करता हूँ और मानता हूँ कि वे आजादी के बाद के दौर के सबसे बड़े और मकबूल लेखक हैं । .... हमें फ़ख्र इस बात का है कि हमें हिन्दी से जो कमलेश्वर नाम का लेखक मिला है -- वह अपनी जनता को प्यार करता है और उस जनता को अहंकार से नहीं, प्यार से अपनी बात समझाना चाहता है --- ताज्जुब है कि इस शख्स को कितना - कुछ आता है - इस आदमी का नज़रिया वसीह है । दुनिया - जहान की जानकारी इसे है,.... सबसे बड़ी चीज कि हमारा यह लेखक कुन्दन की तरह तपा हुआ और ओरिजनल है । ... भाषा के रोइस को जिस तरह यह लेखक पकड़ता है उनसे एकाएक हमें अपनी मिट्टी, अपने लोगों की महक मिलने लगती है । कमलेश्वर जब स्क्रिप्ट लिखकर लाते हैं तो आसमान पर चढ़े हुए हमारे दिमागों को धरती की सच्चाइयों की तरफ़ देखने के लिए मजबूर कर देते हैं ... कमलेश्वर ने आकर फिल्मी जमींदार को बहुत हद तक मुर्दा कर दिया है । कमलेश्वर की सबसे बड़ी ताकत उनकी "ओरिजनेलिटी" है । उससे भी बड़ी ताकत है उनकी ताजगी ।... अगर ऐसा न होता तो आज कमलेश्वर के पास फ़िल्में लिखवाने वालों का सबसे लम्बा क्यू न होता । लोग जानते हैं कि कमलेश्वर के हाथ में फ़िल्म सौंपकर हम बेफ़िक्र हो सकते हैं .... "॥2॥ इस प्रकार कमलेश्वर जी का फिल्म क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रहा है ।

॥6॥ कहानीकार के रूप में :

हिन्दी साहित्य में एक कहानीकार के रूप में कमलेश्वर जी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है । एक यथार्थवादी, सामाजिक जनचेतना से जुड़ी कहानियों का समझना एक आम आदमी के समय, परिवेश व जीवन की विसंगतियों, समस्याओं को पहचानना है । ये कहानियाँ परिवेश का जीवन्त चित्रण करती हैं । कमलेश्वर जी का कहना है कि "समय - सापेक्ष मूल्यों को लेकर चलने वाला साहित्य और उन मूल्यों को व्यावहारिकता में फलित करने वाली राजनीति - यही ऐसे माध्यम हो

---

1. "कमलेश्वर" - मधुकर सिंह - गिरीश रंजन - पृ० - 349
2. पूर्वोक्त - अनाम - पृ० - 351 - 352

सकते हैं, जो शोषित और दलित मनुष्यता को उसकी मुक्ति का आधार दे सकते हैं ।"§1§ कमलेश्वर जी ने अपनी कहानियों को "जीवन के प्रति प्रतिबद्ध" कहा है । शायद जीवन के प्रति यही प्रतिबद्धता महसूस कर कमलेश्वर जी पिछले तीस वर्षों से भी ज्यादा समय से मामूली आदमी की स्थिति और संवेदना को उसकी चारित्रिक गहनता और सहजता को कहानियों के रूप में लिपिबद्ध कर रहे हैं । कहानियों के प्रति उनकी यह दृष्टि उनके प्रथम कहानी संग्रह "राजा निरबंसिया" से ही स्पष्ट हो जाता है । धनंजय वर्मा जी का कहना है कि -- "मैंने कमलेश्वर की कहानियों को बदली हुई और बदलती हुई मनःस्थिति की कहानियाँ कहा है । यह बदलना जहाँ निरन्तर विकास का प्रतीक है, वहाँ बदलाव एक रूपान्तरण का । और कमलेश्वर की कहानियाँ विकास और रूपान्तरण दोनों को साथ - साथ समेटते चलने की कोशिशें हैं । "§2§ कमलेश्वर जी की रचना को शुरू से लेकर अब तक देखा जाय तो यह बात साफ हो सकती है कि उनका कथ्य और उनकी अभिव्यक्ति कभी एक सी नहीं रही उनमें लगातार परिवर्तन होता चला गया है । उनकी कहानियाँ गाँव से कस्बा और कस्बे से नगर - महानगर की यात्रा है । उनकी यात्रा जितनी ऊपरी है उतनी, भीतरी भी है ।

" राजा निरबंसिया " कहानी में यह चीज खूब अच्छी तरह अंकित है । जीवन में कविता क्यों नहीं है, यह घर एक पागलखाना बनकर क्यों रह गया है, सबं लोग इस कदर आहत क्यों अनुभव कर रहे हैं कि ये जोकर बनकर रह गये हैं, हँसी क्यों नहीं आती, कुछ इस तरह के सवाल यह कहानी उठाती है । एक सूक्ष्मता इस कहानी में है, शिल्प के स्तर पर वह एकदम स्पष्ट है, लेकिन आदमी को इस सूक्ष्मता का अहसास नहीं है ।"§3§ राजा निरबंसिया" एक यथार्थ की कहानी है । " वह किसी पुराण - चर्चित राजा अथवा हमारे समकालीन किसी मुहर्रिर की ही कहानी नहीं है, वह उस नैरेटर की भी कहानी है, जो इस किस्से को सुना रहा है । गरीबी ने उस आदमी को किस हद तक तोड़ दिया कि उसने अपनी बीवी बेच दी। घर की बहू - बेटियों की यह इज्जत । अपना दुश्मन वह आप ही बन बैठा ।"§4§ हिन्दी में देखा जाये तो परस्पर सभी कहानी में समानता देखने

---

1. कमलेश्वर : "मेरा पन्ना" §जुलाई, 75§ से
2. मधुकर सिंह सम्पादक - "कमलेश्वर" धनंजय वर्मा - पृ० 106 -107
3. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - श्याम गोविन्द - पृ० 118
4. पूर्वोक्त - पृष्ठ - 118

को मिलती है । एक स्वर शुरू करता है, बहुत - से उसी का अनुकरण करने लगते हैं । पर कमलेश्वर जी का स्वर सबसे अलग है, और हर बार अपने स्वर से भी अलग है ।

राजनारायण जी कमलेश्वर को एक पैदाइशी किस्सागो कहा है -- एक "सही कलाकार" । वे "नयी कहानी" के एक प्रमुख हस्ताक्षर ही नहीं, आज की कहानी के एक प्रमुख प्रवक्ता तथा शिल्पी भी है । .... इसीलिए यह आकस्मिक नहीं है कि पिछले दो दशक में अनेक वादों - प्रतिवादों, नारों - वक्तव्यों के बावजूद कमलेश्वर की ही सर्वाधिक कहानियाँ है जिन्हें कहानी विधा की उपलब्धि के रूप में स्वीकारा जा सकता है या रेखांकित किया जा सकता है । "§1§..... बकौल दुष्यन्त कुमार "उसकी हर कहानी उसके जीवनानुभवों में से निकली है ... उसने पढ़ - पढ़कर संक्रांति को नहीं झेला है, बल्कि स्वयं जिया है ।"§2§ इसलिए राजनिरबंसिया से लेकर "मान सरोवर के हंस" तक की उनकी कथा - यात्रा लेखन में उनकी रचनात्मक सक्रियता का सबूत तो है ही, जीवन के यथार्थ - बोध को, जो दर्द या यातना के रूप में उनकी हर साँस में रचा - बसा है, उजागर करने के लिए भी प्रतिबद्ध है ।

निश्चय ही "बथान" की "लाश", "जोखिम", "बयान", "लड़ाई", "रातें" ऐसी सशक्त कहानियाँ हैं जो बड़ी बेरहमी से इस "व्यवस्था" के राजनीतिक - आर्थिक प्रपंच और भ्रष्टता को बेनकाब करती हैं और आम आदमी की मजबूरी, घुटन, यातना और टूटन को उजागर करती हैं । प्रतीकों के माध्यम से कही गयी बात में भी वह तपन है जो इस पूँजीवाद की पोल या व्यवस्था के ढोंग को साफ कर देने में समर्थ है । कमलेश्वर जी ने एक स्थान पर यह स्वीकारा है कि आज की कहानी दुनिया के व्यावहारिक और वास्तविक जीवन से जुड़ी है ।

आज का यथार्थ आम आदमी के विरुद्ध है । व्यवस्था का हर संस्थान आदमी के खिलाफ षड्यंत्रशील है । "यह इसी देश में हो सकता है कि शाम को कानून तोड़ लिया जाये तो मनमाने दामों पर बिक्री के लिए वही अनाज फिर निकल आये । यह इसी देश में मुमकिन है कि आदमी को नंगा कर देने के लिए कपड़ा - मिलें कपड़ा बनायें, दवाओं की फैक्टरियाँ लगातार बढ़ती चली जायें और आदमी दवाईयाँ खरीदने लायक न रह जायें ।"§3§ कमलेश्वर जी ने अपनी प्रिय कहानियों के संकलन

---

1. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - राजनारायण - पृ0 140
2. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - §सारिका, दिसम्बर- 64
3. कमलेश्वर - "मेरा पन्ना"

में अधिकतर कहानियाँ इसी दौर को चुनी है जैसे कि -- "मैं", "लाशं", "रातें", "जोखिम", उस रात वह मुझे बीच कैण्डी पर मिली थी," "कितने पाकिस्तान" आदि इस दौर की सभी कहानियों में कमलेश्वर के यथार्थवादी दृष्टिकोण की परिपक्वता स्पष्ट है । यद्यपि इस दौर की बहुत सारी कहानियाँ समांतर कहानियाँ मानी जाती है किन्तु उससे कहानी की श्रेष्ठता को कम नहीं किया जा सकता । विशेषत: "इतने अच्छे दिन", इस कहानी को पुष्पपाल सिंह ने मुंशी प्रेमचन्द की अमर कहानी "कफन" के समकक्ष माना है ।"(1) अपना एकांत", "दुनिया बहुत बड़ी है", " या कुछ और" ये सभी कहानियाँ समकालीन, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थितियों पर प्रहार करते हुये भी इस व्यवस्था से पीड़ित सामान्य मन व जन की व्यवस्थाओं का ज्वलंत चित्रण करती हैं । किन्तु इसी दौर में प्रकाशित कुछ अन्य कहानियाँ कथा शिल्प व चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली नहीं बन पाई हैं । पुष्पपाल सिंह के अनुसार "एक किस्म की रोमानी वृत्ति अंत तक कमलेश्वर के कहानीकार रूप के साथ जुड़ी रही है जो उनकी बहुत सी कहानियों को कमजोर कर देती है ।" लेकिन स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की कहानियाँ चाहे उन्हें "नई कहानी" माना जाये या समान्तर कहानी " आम आदमी के जीवन संघर्ष की कहानियाँ है । और समाज के सभी स्वरों पर घटित होने वाले मूल्यों पर कहानियाँ लिखकर कमलेश्वर जी ने अपनी सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता का परिचय दिया है । कभी देश की दयनीय स्थिति ने उन्हें प्रेरित किया है तो कभी समाज के शोषण ने, कभी राजनैतिक दुर्व्यवस्था से उत्पन्न व्यंग और कभी गरीबी से उत्पन्न जटिलताओं ने और इन सभी स्थितियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता मार्मिक कहानियों के रूप में लिपिबद्ध हो गई है । कमलेश्वर जी की कहानियाँ "साफ, स्वस्थ दृष्टि और सम्भानापूर्ण भविष्य की पारदर्शी कहानियाँ हैं । उनकी कहानियों में विचार और भावना का सही संतुलन है । वे सहजता के कहानीकार हैं । कमलेश्वर जी की कहानी में आर्थिक दबाव मानवीय मूल्यों का गला घोट रहा है, इसकी स्पष्ट झलक "राजा निरबंसिया" कहानी में देखने को मिलती है । इस कहानी की चन्दा कम्पाउण्डर बचनसिंह के हाथों से अपने को तब तक बचाये रखती है जब तक जगपत्ति अस्पताल में है । किन्तु उस समय वह अपने को बचा नहीं पाती जब जगपत्ति बचनसिंह से टाल के लिए रूपये लेता है । चन्दा के ये शब्द -"तब-तब की बात झूठ है.... "

---

1. कमलेश्वर "कहानी का संदर्भ"- पुष्पपाल सिंह - पृ0 76

सिसकियों के बीच चन्दा का स्वर फूटा "लेकिन जब तुमने हमें बेच दिया..." सब कुछ कह देते हैं । कमलेश्वर जी की "नौकरीपेशा" और "कस्बे का आदमी" में भी मानवीय मूल्यों का गला घोंटता आर्थिक दबाव है ।

कमलेश्वर जी जब दिल्ली में आये तब उन्हें सब कुछ बदला-बदला लगा, इलाहाबाद छोड़ने में उन्हें काफी तकलीफ हुई थी । दिल्ली में "एक अजीब सा परायापन और बेगानापन लगा है ।" इस परिवर्तित बोध की कहानियाँ हैं -- "खोयी हुई दिशाएं," "दिल्ली में एक मौत", "दिल्ली में एक और मौत", "पीला गुलाब", "साँप" आदि । ये कहानियाँ शहरी जीवन की मजबूरियों की कहानियाँ हैं जिनमें चुभन है । कमलेश्वरजी की कहानियाँ आलोचकों के लिए बराबर चुनौती उछालती रही है । उन्होंने जीवन को सदा उन्मुक्त भाव से ग्रहण किया है । मध्यवर्ग और निम्न मध्य वर्ग के जीवन का हर रंग - इनकी कहानियों में चित्रित है । कमलेश्वरजी ने लिखा भी है -- "नयी कहानी आग्रहों की कहानी नहीं है, प्रवृत्तियों की हो सकती है । और उसका मूल श्रोत है -- जीवन का यथार्थ बोध । और इस यथार्थ बोध को लेकर चलने वाला वह विराट मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग है, जो अपनी जीवनी शक्ति से आज के दुर्दान्त संकट को जाने - अनजाने झेल रहा है ..."(1) कमलेश्वर जी की बाद की कहानियों का संदर्भ बदल जाता है । वह आम आदमी के साथ जुड़ने लगता है ।

कमलेश्वर जी एक सतर्क कहानीकार हैं । अपने आसपास फैली दुनियाँ को खुली नजर से सही और साफ देखने की कोशिश इनके लेखन को महत्वपूर्ण बनाती है । समाज नारी के प्रति सदा क्रूर और आक्रमक रहा है । उसे बराबर जिंस की तरह इस्तेमाल किया गया है । "मांस का दरिया" और "रातें" कहानियाँ इसकी सबूत है। "मांस का दरिया " का स्वर नितान्त भिन्न स्वर है । यह वेश्या के जीवन का एक जलता हुआ दस्तावेज है, जिसमें उसके शोषण और संघर्ष को ईमानदारी से सम्प्रेषित किया गया है ।

" बहुत बार उसने कराह दबाई और कँवरजीत को रोका । आँखों के सामने अँधेरा छा - छा जाता था और जोर पड़ते ही जाँघ फटने लगती थी । कँवरजीत तीन - चार बार रूका, फिर जैसे उस पर शैतान सवार हो गया था ....

---

1. मांस का दरिया" - आत्म - कथ्य, पृ0 7

प्रस्तुत किया गया है । युग - बोध और युग सत्य को कमलेश्वरजी ने सदैव प्राथमिकता दी है । उनके सभी उपन्यासों और कहानियों में उनका यह चिंतन प्रमुख रहता है ।

.... अरे रूक तो ... वह चीखा था और जुगनू की टाँगे दबाकर हावी हो गया था ..। ... अरी, अम्मारे... मार डाला.... वह पूरी आवाज़ में चीखी थी, जैसे किसी ने क़त्ल कर दिया हो और वह छटपटा कर बेहोश - सी हो गयी थी ।"

कमलेश्वर जी का तीसरा दौर सन् 66 के अंतिम महीने में बंबई से शुरू हुआ । यहाँ आकर कमलेश्वर जी की दृष्टि और अधिक विस्तृत हो जाती है ।

इस दौर की मुख्य कहानियाँ "जोखिम", "बयान", "मान सरोवर के हंस", "नागमणि" आदि [illegible] है । 'बयान' कहानी गलत व्यवस्था के हाथों षडयंत्र के शिकार एक आदमी की मार्मिक कहानी है जो झीझोड़ती ही नहीं, बुरी तरह त्रस्त करती है और पाठक को सोचने के लिए विवश कर देती है । अभी इनकी कहानियों के बारे में अधिकाधिक रूप से कुछ कहना न्यायसंगत नहीं होगा, क्योंकि इनकी कथायात्रा अभी सतत गतिमान है वह नये - नये उन्मेषों को छू और आत्मसात कर रही है । अब तक कमलेश्वर जी का ... कहानियों के ... संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनकी विस्तृत चर्चा हम अन्यत्र करेंगें । यहाँ उनके उपन्यास लेखक - रूप से भी परिचित हो लेना उचित होगा ।

(7) उपन्यासकार के रूप में :-

कमलेश्वर जी हिन्दी साहित्य की हर विधा में निपुण रहे हैं । स्वातंत्र्योत्तर काल के कथाकारों में कमलेश्वर एक प्रमुख नाम है । कमलेश्वर जी की कथा कृतियों में मध्य वर्ग का यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरा है । सच तो यह है कि कमलेश्वर जी अपनी कथाओं में युग - सत्य को उद्घाटित करने में अत्यन्त सफल रहते हैं । उनके उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता और सांकेतिकता के साथ नये सामाजिक यथार्थ को निरुपित किया गया है । यही नहीं, स्वातंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य को विकास और नयी दिशा देने में उनका महत्वपूर्ण योग है । उनके उपन्यास देखने में लघु हैं किन्तु उनमें पूर्ण चित्र फलक प्रस्तुत किया गया है । युग - बोध और युग सत्य को कमलेश्वरजी ने सदैव प्राथमिकता दी है । उनके सभी उपन्यासों और कहानियों में उनका यह चिंतन प्रमुख रहता है । डॉ० घनश्याम मधुपजी का कहना है कि — "कमलेश्वर का चिंतन एक ऐसे बुद्धिजीवी का चिंतन है जो, जन साधारण के लिए है । "(1)

---

1. डॉ० घनश्याम मधुप (शोधग्रंथ "हिन्दी लघु - उपन्यास से)

डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना का मत भिन्न है वह कमलेश्वर को गंभीर लेखक ही नही मानते - "कमलेश्वर अब कोई गंभीर लेखक नहीं रह गया है । बम्बई जाकर वह एक सामान्य स्तर का संपादक और चालू फ़िल्म लेखक ही बन पाया । विश्वास न हो तो उसके उपन्यासों, "काली आँधी" और "आगामी अतीत" को पढ़कर देख लो -- दोनों बम्बइया फिल्मों के लिए लिखे उपन्यास हैं और उन पर गुलजार ने फिल्में भी बनायी हैं ।" {1} डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना कमलेश्वर जी के बारे में और कुछ कहना चाहते हैं । उन्होंने कहा कि -- "यदि फिल्मों के लिए उपन्यास स्वीकार कर लिये जाते हैं, तो घटिया लेखक बन जाता है ?" प्रेमचंद, शरतचंद्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अनेक विदेशी लेखकों की साहित्यिक कृतियों पर भी सफल एवं लोकप्रिय फिल्में बनी हैं। तथापि ये लेखक घटिया लेखक नहीं कहे जा सकते । अतः डॉ0 सक्सेना के उक्त कथन में गंभीरता कतई नहीं है । और उनसे सहमत हो पाना तो असंभव है ।

कमलेश्वर जी के अब तक कुल नौ उपन्यास प्रकाशित हुए हैं ।
{1} एक सड़क सत्तावन गलियाँ {2} डाँक बंगला {3} तीसरा आदमी
{4} समुद्र में खोया हुआ आदमी {5} काली आँधी {6} लौटे हुए मुसाफिर
{7} सुबह - दोपहर - शाम {8} रेगिस्तान {9} आगामी अतीत ।
उल्लेखनीय है, उक्त नौं में से चार उपन्यास पुस्तकाकार छपने से पहले पत्रिकाओं में भी छपे थे -- "समुद्र में खोया हुआ आदमी", "साप्ताहिक हिन्दुस्तान में और "काली आँधी" भी "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" में, "एक सड़क सत्तावन गलियाँ," हँस में" तथा "आगामी अतीत" - धर्मयुग में और चार उपन्यास ऐसे हैं, जिन पर फिल्में बन चुकी हैं "बदनाम बस्ती", "डाक बंगला", "आँधी", और "मौसम" जो क्रमशः "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला", "काली आँधी", और "आगामी - अतीत" उपन्यासों पर आधारित हैं ।

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास से जो बाद में प्रकाशक की भूल के कारण "बदनाम गली" शीर्षक से भी प्रकाशित हुआ था । इस प्रकार यह उपन्यास कमलेश्वर जी का प्रथम प्रयास है । पर यह प्रथम प्रयास ही इतना सफल है कि इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आकार - प्रकार में "लघु" होने के बावजूद विस्तार में काफी "बड़ा" है । और गहराई इसकी इतनी ज्यादा कि उसकी थाह पाना मुश्किल है ।

---

1. "कमलेश्वर"-- मधुकर सिंह - पृ0 186

कमलेश्वर जी का जन्म उत्तर प्रदेश के पश्चिमी इलाके के मैनपूरी जिले में हुआ था । स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले जिला मुख्यालयों के साथ जो एक कस्बाई संस्कृति उभरी थी उसे बड़ी खूबी से इन्होंने अपनी रचनाओं में उभारा है । "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", और "आगामी अतीत" नामक इनके उपन्यास कस्बाई जीवन की नन्हीं - नन्हीं घटनाओं, धूल भरी टूटी - फूटी सड़कों और उन सड़कों पर कई गलियों में भूखे, नंगे बच्चों से भरे पड़े हैं । "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में पात्रों की संख्या अधिक होने पर भी जीवन से इन पात्रों का अटूट लगाव, इनकी क्षुद्रता और इनकी महानता के अनेक ऐसे वर्णन कमलेश्वर जी के उपन्यासों में देखने को मिलते हैं । इस उपन्यास में कस्बे में भी कुछ नया परिवर्तन होना चाहिए इसका "सरमन सिंह" नामक पात्र के जरिए हमें पता चलता है । यह सब हिन्दी साहित्य में नहीं पाया जा सकता ।

इस तरह कथा - भूमि को विस्तार और भाषा को नया संस्कार देने में कमलेश्वर जी का महत्वपूर्ण योगदान है । लेकिन एक बात जो सर्वोपरि उल्लेखनीय है, वह है कथानक में वर्णित जीवन को देखने की दृष्टि, साम्प्रदायिकता, अन्धविश्वास, और परम्परागत रुढ़िवादिता के सर्वथा विपरीत कमलेश्वर जी एकता, प्रगति और समानता के सिद्धान्तों के हामी हैं । शायद यही कारण है जिसमें उनकी रचनाशक्ति को गति और महत्ता प्रदान की है । कमलेश्वर जी का उपन्यास "लौटे हुए मुसाफिर" उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण है । "रेगिस्तान" आजादी के सपने पूरा न होने को मार्मिक कहानी है । "डाक बंगला" एक प्रसिद्ध उपन्यास का नवीन संशोधित संस्करण है । इस उपन्यास में नर - नारी सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण विशेष वातावरण और परिस्थितियों का अंकन कुछ इस ढंग से होती है कि पाठक अभिभूत हुए बिना नहीं रहता । "तीसरा आदमी" में प्रेम अथवा प्रतिद्वन्द्विता के नाते तीसरा आदमी आदिकाल से स्त्री और पुरुष के बीच आता रहा है । लेकिन कमलेश्वर जी का तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की उपज है जो आता है और चला जाता है : फिर भी स्त्री और पुरुष के बीच दीवार - सा बना खड़ा रहता है ... । "काली आँधी" उपन्यास का कथानक देश की समसामयिक राजनीति से प्रभावित है । राजनीति में चलने वाली उठक - पटक को पूरी जीवन्तता के साथ "काली आँधी" के पात्रों ने जिया है ।

ईमानदारी से कही गई यह कहानी यथार्थ के इतने नजदीक है कि पाठक उसका रस लेता है । इस उपन्यास पर फिल्म भी बन चुकी हैं, यह इसकी लोकप्रियता का एक और प्रमाण है ।

राजेन्द्र यादव के निम्नलिखित शब्द इस बात की पुष्टि करते हैं -- "कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता, मगर युग और अपनी पीढ़ी का सच वह जरुर बोल सकता है । उसके पास ज़बान है और उसे बात करनी भी आती है क्योंकि इसी समय सच पर आकर बड़े - बड़े जबानदार लोग चुप हो जाते हैं ।"§1§ इसका आगामी अतीत का उदाहरण देखें -- "चले आते हैं मरदुए । इश्क लड़ायेंगे ... अबे, यहाँ धन्धा होता है धन्धा ! इश्क नहीं ... अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुख्ता करके आना ।"§2§ कमलेश्वर जी ने सहज और यथार्थ चित्रण करके उनकी दारूण कथा तथा दयनीय परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है, जो उनकी भाषा से ही स्पष्ट हो जाता है । डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना का कहना है कि -- " कमलेश्वर के सारे उपन्यासों को पढ़कर कुछ खास - खास बातें जो उभरकर सामने आती हैं, उन्हें यहाँ निष्कर्ष रूप में देना चाहूँगा ।

§1§ "देवा की माँ" और "राजा निरबंसिया" से लेकर "बयान" और "कितने अच्छे दिन" तक की अपनी कथा - यात्रा में जिस प्रकार कमलेश्वर ने अनेक पड़ाव और मंजिले पार की हैं, उसी प्रकार अपनी औपन्यासिक यात्रा में भी उन्होंने "एक सड़क सत्तावन - गलियाँ, से लेकर "आगामी अतीत" तक अनेक मंजिलें पार की हैं ।

§2§ औपन्यासिक लेखन की इस यात्रा में कई मंजिलें उन्होंने ऐसी भी पार कर ली हैं जो हिन्दी के दूसरे अच्छे - से - अच्छे उपन्यासकार नहीं कर पाये हैं । मिसाल के तौर पर यहाँ "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "समुद्र में खोया हुआ आदमी" और "काली आँधी" के नाम बिना किसी द्विधा के लिया जा सकता है ।

§3§ अपनी अधिकांश कहानियों की भाँति अपने अधिकांश उपन्यासों में भी कमलेश्वर की दृष्टि सदा सौद्देश्य और सजग रही है तथा उन्हें पढ़ने पर कहीं भी ऐसा नहीं, लगता कि कमलेश्वर के दृष्टि - पथ से उनका उद्देश्य थोड़ा ईधर - उधर हो गया है ।

---

1. "कमलेश्वर- मधुकर सिंह - पृ0 220
2. "आगामी अतीत" कमलेश्वर पृ0 68

§4§ यथार्थ जीवन की सबल अभिव्यक्ति और समर्थ भाषा, कमलेश्वर के लघु उपन्यासों की जानी - मानी विशेषताएँ हैं । पर यही भाषा कहीं - कहीं जब बेहद काव्यात्मक हो गयी है जैसे "डाक बंगला" या "आगामी अतीत" के कुछ अंशों में, तो यथार्थ जिन्दगी से थोड़ी दूर चली गयी है और वह स्वयं कमलेश्वर के संघर्षशील व्यक्तित्व के प्रतिकूल लगती है ।

§5§ कमलेश्वर अपने उन उपन्यासों में बेहद सफल उपन्यासकार सिद्ध हुए हैं, जिनमें उन्होंने सहज, स्वाभाविक शिल्प और शैली को अपनाया है । और इस स्वाभाविक शैली के रहते हुए भी, कहीं - कहीं वे प्रतीकात्मक ढंग से भी अपनी बातें स्पष्ट कर सके हैं, जैसे "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "तीसरा आदमी", "समुद्र में खोया हुआ आदमी", या "काली आँधी" में । इस प्रकार ये चारों उपन्यास कमलेश्वर के तो श्रेष्ठ लघु उपन्यास हैं ही वे अब तक के श्रेष्ठ हिन्दी - उपन्यासों की श्रेणी में भी गिनाये जा सकते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कमलेश्वर जी के ये उपन्यास यद्यपि आकार में लघु है किन्तु शैली की विशेषता के कारण गुणवता में श्रेष्ठ हैं । और इन्हे हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासों में परिगणित किया जा सकता है । इन उपन्यासों पर आगे अधिक गहराई से विचार किया जायेगा ।

****